गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 067
दि. 06.07.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

‘सुन रहे हो न विनोद... काम बोले छे!’: पीएम मोदी ने ‘पंचायत’ के मशहूर डायलॉग से जीता दिल, सेमीकंडक्टर मिशन पर दिया आत्मनिर्भर भारत का बड़ा संदेश

साणंद (गुजरात)/नई दिल्ली। गुजरात के साणंद में देश के तीसरे सेमीकंडक्टर संयंत्र के उद्घाटन समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक अलग ही अंदाज देखने को मिला। आमतौर पर गंभीर और विकास केंद्रित भाषण देने वाले प्रधानमंत्री ने इस बार लोकप्रिय वेब सीरीज ‘पंचायत’ के चर्चित संवाद “सुन रहे हो न विनोद” का इस्तेमाल कर पूरे सभागार को ठहाकों से गूंजा दिया। उनके इस सहज और हास्यपूर्ण अंदाज ने न केवल कार्यक्रम में मौजूद उद्योगपतियों, अधिकारियों और अतिथियों का दिल जीत लिया, बल्कि सोशल मीडिया पर भी यह क्षण तेजी से वायरल हो गया। हालांकि भाषण का मूल संदेश स्पष्ट था कि भारत अब केवल तकनीक का उपभोक्ता नहीं, बल्कि दुनिया के लिए उन्नत सेमीकंडक्टर निर्माण का प्रमुख केंद्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

साणंद में आयोजित समारोह भारत के सेमीकंडक्टर मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। यहां प्रधानमंत्री ने वाणिज्यिक उत्पादन की शुरुआत करते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में चिप निर्माण भारत की आर्थिक प्रगति, तकनीकी आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का आधार बनेगा। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल योजनाओं की घोषणा करना नहीं, बल्कि उन्हें धरातल पर उतारकर परिणाम देना है। इसी दौरान मंच पर मौजूद उद्योगपति और CG Power and Industrial Solutions के चेयरमैन वेल्लायन सुब्बैया ने अपने संबोधन में गुजराती कहावतों का उल्लेख करते हुए कहा कि गुजरात की पहचान ही है—”काम बोले छे”। उन्होंने यह भी कहा कि बड़ा लक्ष्य रखना ही सफलता का पहला कदम है और भारत अब सेमीकंडक्टर क्षेत्र में उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है।

सुब्बैया की बात का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ने मुस्कुराते हुए कहा कि वह कभी छोटे लक्ष्य निर्धारित नहीं करते।

उन्होंने कहा कि यदि कोई स्मारक बनाना हो तो दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा बनाई जाएगी, जो देश की महत्वाकांक्षा और क्षमता का प्रतीक बने। इसके बाद उन्होंने अचानक मंच से लोकप्रिय संवाद दोहराते हुए कहा—”और सुब्बैया जी ने कहा काम बोले छे... सुन रहे हो न विनोद... काम बोले छे।” जैसे ही यह संवाद उनके मुंह से निकला, पूरा सभागार तालियों और ठहाकों से गूंज उठा। मंच पर बैठे उद्योगपति भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सके, जबकि उपस्थित लोगों ने लंबे समय तक तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री का यह वीडियो कुछ ही समय में सोशल मीडिया पर वायरल हो गया और लाखों लोगों ने इसे साझा करते हुए उनके सहज और आधुनिक संवाद शैली की सराहना की।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत अब तकनीकी क्रांति के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। उन्होंने कहा कि देश ने पिछले एक दशक में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। वर्ष 2014 की तुलना में आज भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन कई गुना बढ़ चुका है और मोबाइल निर्माण के क्षेत्र में भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता बन गया है। मोबाइल निर्यात में भी देश ने रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की है। उनका कहना था कि अब यही सफलता सेमीकंडक्टर उद्योग में दोहराई जाएगी, क्योंकि भविष्य की लगभग हर आधुनिक तकनीक—चाहे वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता हो, 5G संचार, ऑटोमोबाइल, चिकित्सा उपकरण या रक्षा प्रणाली—सभी की आधारशिला सेमीकंडक्टर चिप ही है।

प्रधानमंत्री ने बताया कि साणंद स्थित यह संयंत्र प्रतिवर्ष लगभग 20 करोड़ सेमीकंडक्टर चिप्स तैयार करने की क्षमता रखेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह लक्ष्य जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा और भविष्य में उत्पादन और अधिक बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने देश में प्रतिवर्ष 50 करोड़ चिप्स के उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है और उन्हें पूरा विश्वास है कि भारतीय उद्योग जगत इस लक्ष्य को निर्धारित समय से पहले ही हासिल कर लेगा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, “स्टेप बाय स्टेप, ब्रिक बाय ब्रिक और अब चिप बाय चिप भारत तकनीकी आत्मनिर्भरता की नई इमारत खड़ी कर रहा है।”

समारोह में यह भी जानकारी दी गई कि इस संयंत्र में निर्मित सेमीकंडक्टर चिप्स की पहली व्यावसायिक खेप जापान भेजी जा चुकी है। इसे भारत के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है, क्योंकि पहली बार बड़े पैमाने पर भारत में निर्मित चिप्स वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बनी हैं। इससे न केवल भारत की तकनीकी क्षमता को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलेगी, बल्कि विदेशी निवेश, निर्यात और रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। अधिकारियों के अनुसार आने वाले समय में भारत से विभिन्न देशों को सेमीकंडक्टर निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश्य केवल घरेलू उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि भारत को वैश्विक तकनीकी आपूर्ति श्रृंखला का भरोसेमंद भागीदार बनाना भी है। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर उद्योग में निवेश बढ़ने से हजारों इंजीनियरों, तकनीशियनों और युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार मिलेंगे। गुजरात सहित देश के विभिन्न राज्यों में स्थापित हो रही नई परियोजनाएं भारत को वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रही हैं।

उन्होंने उद्योग जगत से भी आह्वान किया कि वे केवल वर्तमान जरूरतों तक सीमित न रहें, बल्कि भविष्य की तकनीकों पर निवेश करें। उनका कहना था कि आज जो देश चिप निर्माण में अग्रणी होगा, वही आने वाले दशकों की वैश्विक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करेगा। इसलिए भारत को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ना होगा।

कार्यक्रम के अंत में प्रधानमंत्री ने एक बार फिर विकास, नवाचार और परिणाम आधारित कार्यशैली पर जोर देते हुए कहा कि सरकार का विश्वास घोषणाओं में नहीं, बल्कि धरातल पर दिखाई देने वाले कार्यों में है। उन्होंने मुस्कुराते हुए फिर दोहराया—”काम बोले छे।” इसके साथ ही पूरा सभागार एक बार फिर तालियों से गूंज उठा। प्रधानमंत्री का यह संबोधन केवल तकनीकी उपलब्धियों का संदेश नहीं था, बल्कि आधुनिक लोकप्रिय संस्कृति और विकास के एजेंडे को जोड़ने का एक ऐसा उदाहरण भी बन गया, जिसने उपस्थित लोगों के साथ-साथ देशभर के नागरिकों का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

ओडिशा और मणिपुर में मतदाता सूची का ड्राफ्ट जारी, विशेष पुनरीक्षण के बाद लाखों नाम हटे; 4 अगस्त तक मिलेगा दावा-आपत्ति का मौका

भुवनेश्वर/इंफाल। देश में मतदाता सूची को अधिक सटीक, पारदर्शी और अद्यतन बनाने की दिशा में चलाए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत चुनाव आयोग ने रविवार को ओडिशा और मणिपुर की प्रारूप (ड्राफ्ट) मतदाता सूची जारी कर दी। इस व्यापक सत्यापन अभियान के दौरान दोनों राज्यों में बड़ी संख्या में ऐसे नाम हटाए गए हैं, जो या तो मृत मतदाताओं के थे, दूसरे स्थान पर स्थानांतरित हो चुके थे, एक से अधिक स्थानों पर दर्ज थे अथवा निर्धारित समय तक आवश्यक दस्तावेज और गणना फॉर्म जमा नहीं कर पाए थे। आयोग ने स्पष्ट किया है कि जिन पात्र नागरिकों का नाम प्रारूप सूची में शामिल नहीं हो पाया है, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। वे 5 जुलाई से 4 अगस्त के बीच दावा अथवा आपत्ति दर्ज कराकर अपना नाम दोबारा सूची में शामिल कराने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। सभी दावों और आपत्तियों के निस्तारण के बाद अंतिम मतदाता सूची 6 सितंबर को प्रकाशित की जाएगी।

ओडिशा में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के बाद मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी आर. एस. गोपालन ने बताया कि 20 मई को मतदाता सूची फ्रीज किए जाने के समय राज्य में कुल 3.33 करोड़ पंजीकृत मतदाता थे। इसके बाद 30 मई से 28 जून तक चले विशेष सत्यापन अभियान में प्रत्येक मतदाता के विवरण की गहन जांच की गई। अभियान पूरा होने के बाद जारी ड्राफ्ट सूची में मतदाताओं की संख्या घटकर 3.13 करोड़ रह गई है। इनमें लगभग 1.60 करोड़ पुरुष, 1.53 करोड़ महिलाएं तथा 2,775 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं।

निर्वाचन अधिकारी के अनुसार, इस पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान करीब 20 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए। इनमें सबसे बड़ी संख्या उन मतदाताओं की रही जिनकी मृत्यु हो चुकी थी। ऐसे 8.32 लाख नाम रिकॉर्ड के आधार पर हटाए गए। इसके अतिरिक्त 10.07 लाख ऐसे मतदाता पाए गए जो या तो दूसरे स्थान पर स्थानांतरित हो चुके थे, अपने पते पर उपलब्ध नहीं मिले अथवा सत्यापन के दौरान उनका पता नहीं चल सका। वहीं 1.58 लाख मतदाताओं के नाम एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों में दर्ज पाए गए, जिन्हें नियमानुसार हटाया गया। इसके अलावा लगभग 14 हजार मतदाताओं ने निर्धारित समय सीमा के भीतर बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) को अपना गणना फॉर्म वापस नहीं किया, जिसके कारण उनके नाम भी प्रारूप सूची में शामिल नहीं किए जा सके।

उधर, मणिपुर में भी विशेष पुनरीक्षण अभियान के बाद मतदाता सूची में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी अरुण कुमार सिन्हा ने बताया कि ड्राफ्ट मतदाता सूची में कुल 19,34,399 मतदाता शामिल किए गए हैं। विशेष पुनरीक्षण शुरू होने से पहले राज्य में कुल 20,93,076 मतदाता पंजीकृत थे। इनमें से 19,34,399, अर्थात लगभग 92.42 प्रतिशत मतदाताओं ने निर्धारित समय के भीतर अपने गणना फॉर्म जमा किए। प्रारूप सूची में 9,40,466 पुरुष, 9,93,660 महिलाएं तथा 294 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं।

मणिपुर में सत्यापन के दौरान भी बड़ी संख्या में रिकॉर्ड अपडेट किए गए। चुनाव आयोग के अनुसार 7,394 मतदाता ऐसे मिले जिनके नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज थे। वहीं लगभग 43 हजार मतदाताओं की मृत्यु होने की पुष्टि हुई। इसके अतिरिक्त 1,08,283 मतदाता ऐसे पाए गए जो दूसरे स्थान पर स्थानांतरित हो चुके थे, अपने पते पर उपलब्ध नहीं मिले अथवा 28 जून तक अपना गणना फॉर्म जमा नहीं कर पाए। ऐसे सभी नामों को प्रारूप सूची से हटाया गया है।

निर्वाचन अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि प्रारूप सूची अंतिम सूची नहीं है। यदि कोई पात्र नागरिक यह पाता है कि उसका नाम गलती से सूची से हट गया है या उसमें किसी प्रकार की त्रुटि है, तो वह 5 जुलाई से 4 अगस्त के बीच संबंधित निर्वाचन कार्यालय, बूथ लेवल अधिकारी या निर्धारित ऑनलाइन माध्यमों के जरिए दावा अथवा आपत्ति दर्ज करा सकता है। सभी प्राप्त आवेदनों का विधिवत सत्यापन किया जाएगा और पात्र पाए जाने पर संबंधित मतदाता का नाम अंतिम सूची में शामिल किया जाएगा।

चुनाव आयोग का कहना है कि विशेष गहन पुनरीक्षण का उद्देश्य किसी पात्र मतदाता का नाम हटाना नहीं, बल्कि मतदाता सूची को पूरी तरह अद्यतन और त्रुटिरहित बनाना है ताकि चुनाव प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और विश्वसनीय हो सके। आयोग ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे प्रारूप मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य जांच लें और यदि किसी प्रकार की त्रुटि मिले तो निर्धारित समय के भीतर आवश्यक दावा या आपत्ति प्रस्तुत करें। आयोग का मानना है कि मतदाता सूची की शुद्धता लोकतांत्रिक प्रक्रिया की मजबूती के लिए अत्यंत आवश्यक है और इसी उद्देश्य से यह व्यापक पुनरीक्षण अभियान चलाया गया है।

मंदिर की जानकारी छिपाने से विभाग नहीं बच सकता, सीआईसी का बड़ा फैसला; आरटीआई पर रिकॉर्ड उपलब्ध कराने के दिए निर्देश

नई दिल्ली। सूचना के अधिकार (आरटीआई) को लेकर केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया है कि यदि किसी सरकारी विभाग के पास किसी मंदिर से संबंधित प्रशासनिक, वित्तीय या अन्य आधिकारिक रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, तो वह केवल इस आधार पर सूचना देने से इनकार नहीं कर सकता कि संबंधित मंदिर स्वयं ‘पब्लिक अथॉरिटी’ नहीं है। आयोग ने कहा कि सरकारी विभाग सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत जवाबदेह है और उसके नियंत्रण या अभिरक्षा में मौजूद रिकॉर्ड नागरिकों को उपलब्ध कराना उसकी कानूनी जिम्मेदारी है। इसी सिद्धांत के आधार पर आयोग ने पुडुचेरी के हिंदू धार्मिक संस्थान एवं वक्फ विभाग को निर्देश दिया है कि वह श्री वेदपुरीश्वरर श्री वरदराजपेरुमल देवस्थानम से संबंधित आरटीआई आवेदन पर दोबारा विचार करे और अपने पास उपलब्ध सभी प्रासंगिक सूचनाएं नियमानुसार उपलब्ध कराए।

यह मामला उस समय सामने आया जब एक आवेदक ने मंदिर के वित्तीय प्रबंधन, प्रशासनिक कार्यों और कर्मचारियों से संबंधित विस्तृत जानकारी सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत मांगी थी। आवेदन में वर्ष 2021-22 से 2024-25 तक के वार्षिक बजट की प्रतियां, 2020-21 से 2023-24 तक के ऑडिट किए गए खातों, ऑडिट रिपोर्ट, ऑडिट आपत्तियों के निस्तारण से जुड़े रिकॉर्ड, मंदिर के प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध प्राप्त शिकायतों, उन पर की गई अनुशासनात्मक कार्रवाई, निरीक्षण रिपोर्ट, वैधानिक रजिस्टर तथा मंदिर की संपत्तियों के हस्तांतरण से संबंधित आदेशों और अभिलेखों की जानकारी मांगी गई थी। आवेदक का उद्देश्य मंदिर के प्रशासन और वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता सुनिश्चित करना था।

प्रारंभिक स्तर पर हिंदू धार्मिक संस्थान एवं वक्फ विभाग ने आवेदन में मांगी गई बजट और ऑडिट संबंधी जानकारी को सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 6(3) के तहत संबंधित मंदिर प्रशासन को अग्रेषित कर दिया। इसके बाद मंदिर प्रशासन ने आवेदन यह कहते हुए खारिज कर दिया कि संबंधित देवस्थानम सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 2(एच) के तहत ‘पब्लिक अथॉरिटी’ की परिभाषा में नहीं आता, क्योंकि उसे सरकार से पर्याप्त वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती। इसी आधार पर मंदिर प्रशासन ने सूचना उपलब्ध कराने से इनकार कर दिया।

मामला केंद्रीय सूचना आयोग तक पहुंचने पर सूचना आयुक्त पी.आर. रमेश ने विभाग की इस दलील को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। आयोग ने अपने आदेश में स्पष्ट कहा कि आरटीआई आवेदन सीधे मंदिर को नहीं, बल्कि हिंदू धार्मिक संस्थान एवं वक्फ विभाग को दिया गया था और यह विभाग सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत मान्यता प्राप्त एक सार्वजनिक प्राधिकरण (पब्लिक अथॉरिटी) है। इसलिए विभाग अपनी जिम्मेदारी केवल इस आधार पर नहीं टाल सकता कि संबंधित मंदिर स्वयं ‘पब्लिक अथॉरिटी’ नहीं है। यदि विभाग के पास कानून के तहत संबंधित रिकॉर्ड उपलब्ध हैं या वे उसके नियंत्रण में हैं, तो उन्हें नागरिक को उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा।

आयोग ने अपने आदेश में यह भी स्पष्ट किया कि सूचना का अधिकार अधिनियम का उद्देश्य केवल उन संस्थाओं तक सीमित नहीं है जिन्हें सीधे ‘पब्लिक अथॉरिटी’ घोषित किया गया है, बल्कि यदि किसी सार्वजनिक प्राधिकरण के पास किसी संस्था से संबंधित आधिकारिक रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, तो उन अभिलेखों को भी अधिनियम के तहत उपलब्ध कराया जा सकता है। इसलिए विभाग को यह जांच करनी होगी कि उसके अभिलेखों में मंदिर का बजट, ऑडिट रिपोर्ट, शिकायतों का विवरण, अनुशासनात्मक कार्रवाई, निरीक्षण रिपोर्ट या अन्य प्रशासनिक रिकॉर्ड उपलब्ध हैं या नहीं।

सीआईसी ने यह भी कहा कि शिकायतों की संख्या, उन पर हुई जांच, संबंधित अधिकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई तथा प्रशासनिक रिकॉर्ड सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 2(एफ) के अंतर्गत ‘सूचना’ की श्रेणी में आते हैं। यदि ऐसे रिकॉर्ड विभाग के पास उपलब्ध हैं, तो उन्हें उपलब्ध कराने से इनकार नहीं किया जा सकता। आयोग ने स्पष्ट किया कि केवल मंदिर प्रशासन द्वारा आवेदन अस्वीकार कर दिए जाने के आधार पर विभाग अपनी कानूनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता। अपने विस्तृत आदेश में आयोग ने हिंदू धार्मिक संस्थान एवं वक्फ विभाग को निर्देश दिया कि वह आरटीआई आवेदन के प्रत्येक बिंदु की दोबारा समीक्षा करे और प्रत्येक प्रश्न का अलग-अलग, स्पष्ट एवं संशोधित उत्तर उपलब्ध कराए।

अमित शाह के कोलकाता दौरे से पहले सियासी संग्राम, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्मारक स्थल पर तोड़फोड़ से बढ़ा विवाद

कोलकाता। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के सोमवार को प्रस्तावित कोलकाता दौरे से ठीक पहले पश्चिम बंगाल की राजनीति में नया विवाद खड़ा हो गया है। उत्तर कोलकाता के सुकिया स्ट्रीट स्थित राममोहन लाइब्रेरी के सामने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और गोपाल मुखर्जी (गोपाल पाठा) की प्रस्तावित प्रतिमाओं के लिए बनाए गए चबूतरे और शिलापट्ट में अज्ञात लोगों द्वारा तोड़फोड़ किए जाने के बाद राज्य का राजनीतिक माहौल गर्मा गया है। भारतीय जनता पार्टी ने इस घटना को सुनियोजित साजिश करार देते हुए सत्तारूढ़ ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस पर गंभीर आरोप लगाए हैं, जबकि पुलिस ने मामले की जांच तेज कर दी है। घटना ऐसे समय सामने आई है जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह कोलकाता पहुंचने वाले हैं।

भाजपा नेताओं के अनुसार, रविवार तड़के कुछ अज्ञात लोगों ने भारी औजारों की मदद से स्मारक स्थल पर बने चबूतरे और वहां स्थापित शिलापट्ट को क्षतिग्रस्त कर दिया। स्थानीय कार्यकर्ताओं का दावा है कि शनिवार देर रात तक निर्माण कार्य पूरी तरह पूरा हो चुका था और अगले चरण की तैयारियां चल रही थीं। लेकिन रात के अंधेरे में असामाजिक तत्वों ने स्मारक स्थल को निशाना बनाते हुए चबूतरे को नुकसान पहुंचाया और नामपट्ट को तोड़ दिया। सुबह जब कार्यकर्ता और स्थानीय लोग वहां पहुंचे तो तोड़फोड़ का दृश्य देखकर आक्रोश फैल गया।

इसके बाद भाजपा नेताओं और समर्थकों ने मौके पर पहुंचकर घटना के विरोध में प्रदर्शन किया तथा इसे लोकतांत्रिक मूल्यों और महान विभूतियों के सम्मान पर हमला बताया।

घटना के बाद भारतीय जनता युवा मोर्चा के पदाधिकारियों ने तत्काल अमहर्स्ट स्ट्रीट थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों तथा ट्रैफिक निगरानी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि घटना को अंजाम देने वाले लोग कौन थे और उनके पीछे किसी संगठित समूह या राजनीतिक उद्देश्य की भूमिका थी या नहीं। फिलहाल पुलिस ने किसी भी राजनीतिक दल की संलिप्तता की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है और जांच पूरी होने तक किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से इनकार किया है।

भाजपा ने इस घटना को केवल तोड़फोड़ नहीं बल्कि राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित कार्रवाई बताया है। पार्टी नेताओं का कहना है कि पश्चिम बंगाल में विपक्षी दलों के कार्यक्रमों और राष्ट्रीय नेताओं से जुड़े आयोजनों को बाधित करने की लगातार कोशिशें की जा रही हैं। उनका आरोप है कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्रवादी नेता की स्मृति से जुड़े कार्यक्रम को विवादित बनाने और राजनीतिक संदेश देने के उद्देश्य से यह घटना कराई गई। भाजपा ने दोषियों की शीघ्र गिरफ्तारी और निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए राज्य सरकार पर कानून-व्यवस्था बनाए रखने में विफल रहने का आरोप लगाया है।

दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस की ओर से भाजपा के आरोपों को राजनीतिक बयानबाजी बताते हुए खारिज किया गया है। पार्टी नेताओं का कहना है कि बिना जांच पूरी हुए किसी भी दल पर आरोप लगाना उचित नहीं है। उनका कहना है कि पुलिस स्वतंत्र रूप से मामले की जांच कर रही है और दोषी चाहे कोई भी हो, उसके खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए। तृणमूल नेताओं ने भाजपा पर भी घटना का राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करने का आरोप लगाया है।

इस पूरे घटनाक्रम के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का कोलकाता दौरा राजनीतिक दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे। अपने दौरे के दौरान वह न्यू टाउन स्थित इको पार्क में डॉ. मुखर्जी की प्रस्तावित 125 फीट ऊंची प्रतिमा के निर्माण कार्य का शिलान्यास करेंगे। यह प्रतिमा पश्चिम बंगाल में डॉ. मुखर्जी की स्मृति को समर्पित सबसे प्रमुख स्मारकों में शामिल होगी।

इसके अतिरिक्त अमित शाह भवानीपुर स्थित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पैतृक आवास पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे तथा बाद में बिस्वा बांग्ला मेला प्रांगण में आयोजित भव्य जयंती समारोह को संबोधित करेंगे। भाजपा इस कार्यक्रम को आगामी राजनीतिक रणनीति और संगठनात्मक विस्तार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण मान रही है। ऐसे में स्मारक स्थल पर हुई तोड़फोड़ की घटना ने राज्य की राजनीति को और अधिक गरमा दिया है।

फिलहाल पूरे मामले पर सभी की नजर पुलिस जांच पर टिकी हुई है। सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी साक्ष्यों और प्रत्यक्षदर्शियों के बयान के आधार पर पुलिस दोषियों की पहचान करने में जुटी है। वहीं, भाजपा इस मुद्दे को लेकर राज्य सरकार पर लगातार हमलावर है, जबकि तृणमूल कांग्रेस जांच पूरी होने से पहले किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से बचने की बात कह रही है। आने वाले दिनों में जांच की दिशा और अमित शाह के दौरे के दौरान दिए जाने वाले राजनीतिक संदेश इस विवाद को और अधिक चर्चा का विषय बना सकते हैं।

संपादकीय

रीलों का भविष्य या शिक्षा की नई दिशा?

समय तेजी से बदल रहा है और उसके साथ बदल रही हैं हमारी प्राथमिकताएं भी। कभी स्कूलों में बच्चों को अच्छी लिखावट, साफ उच्चारण, सामान्य ज्ञान और नैतिक शिक्षा पर सबसे अधिक जोर दिया जाता था। फिर कंप्यूटर शिक्षा का दौर आया, उसके बाद कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स जैसे विषय चर्चा में आए। अब शिक्षा जगत में एक नया शब्द तेजी से लोकप्रिय हो रहा है—'डिजिटल क्रिएटर'। यह शब्द सुनने में जितना आधुनिक लगता है, उतने ही सवाल भी अपने साथ लेकर आता है। आखिर डिजिटल क्रिएटर तैयार करना शिक्षा का नया उद्देश्य है या बदलती दुनिया की वास्तविक आवश्यकता? इस विषय पर जितनी गंभीर बहस होनी चाहिए, उतनी ही हास्य और व्यंग्य की गुंजाइश भी दिखाई देती है। मान लीजिए किसी गांव की चौपाल पर खेलावन काका बैठे हैं। सामने मुनि नारद अपने दिव्य ज्ञान के साथ विराजमान हैं। तभी चर्चा छिड़ जाती है कि अब स्कूलों में बच्चों को डिजिटल क्रिएटर बनने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। काका पहले तो चौंकते हैं, फिर पूछ बैठते हैं, "अरे मुनिनाथ, हम तो अब तक बच्चों को मोबाइल से दूर रहने की सलाह देते रहे। अब सरकार कह रही है कि मोबाइल उठाओ और रील बनाओ। आखिर यह कैसी पढ़ाई है?" मुनि मुस्कुराते हैं और कहते हैं, "वत्स, यही तो समय का परिवर्तन है। पहले किताबों से भविष्य बनता था, अब कैमरे से भी बन सकता है।" काका अभी भी संतुष्ट नहीं होते। कहते हैं, "हमारे जमाने में मास्टर जी कहते थे कि पढ़-लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर या अफसर बनना। अब क्या मास्टर जी कहेंगे कि बेटा, पहले कैमरे का एंगल ठीक करो, फिर डायलॉग बोलो और वायरल हो जाओ?" यह सुनकर चौपाल पर बैठे लोग हंस पड़ते हैं, लेकिन इस हंसी के पीछे एक गंभीर सवाल भी छिपा होता है कि आखिर शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

आज सोशल मीडिया ने दुनिया बदल दी है। लाखों लोग मोबाइल फोन के जरिए वीडियो बनाकर अपनी पहचान बना रहे हैं। कोई खाना बनाना सिखा रहा है, कोई खेती के नए तरीके बता रहा है, कोई विज्ञान को आसान भाषा में समझा रहा है, तो कोई हास्य के माध्यम से लोगों का मनोरंजन कर रहा है। ऐसे अनेक डिजिटल क्रिएटर हैं, जो हर महीने लाखों रुपये की आय भी अर्जित कर रहे हैं। ऐसे में यदि बच्चों को डिजिटल माध्यमों का जिम्मेदार और रचनात्मक उपयोग सिखाया जाए, तो इसमें बुराई भी नहीं दिखाई देती।

लेकिन व्यंग्य यहीं जन्म लेता है। क्योंकि जिस मोबाइल को माता-पिता अब तक बच्चों से छिपाते थे, वही मोबाइल अब शिक्षा का उपकरण बनकर सामने आ रहा है। जिस रील को समय की बर्बादी कहा जाता था, वही अब कौशल विकास का हिस्सा बनने लगी है। यही विरोधाभास लोगों को सोचने पर मजबूर करता है।

मुनि नारद फिर समझाते हैं, "देखो काका, दुनिया बदल गई है। अब केवल नौकरी की प्रतीक्षा करने से काम नहीं चलेगा। यदि कोई बच्चा अपनी प्रतिभा से लाखों लोगों तक पहुंच सकता है, ज्ञान बांट सकता है और सम्मानपूर्वक आय भी कमा सकता है, तो उसे वह अवसर क्यों न मिले?" काका तुरंत जवाब देते हैं, "बात तो ठीक है, लेकिन अगर सारे बच्चे कैमरे के सामने ही खड़े हो गए, तो कैमरे के पीछे काम कौन करेगा?"

यह सवाल सुनकर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा जाता है। क्योंकि हर नई तकनीक अपने साथ अवसर भी लाती है और चुनौतियां भी। डिजिटल क्रिएटर बनना केवल मोबाइल पर वीडियो रिकॉर्ड करना नहीं है। इसके लिए विषय का ज्ञान, भाषा पर पकड़, प्रस्तुति की कला, तकनीकी समझ, वीडियो संपादन, कॉपीराइट की जानकारी और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारी भी जरूरी है। यदि प्रशिक्षण इन सभी पहलुओं के साथ दिया जाए, तो यह वास्तव में एक उपयोगी कौशल बन सकता है। व्यंग्य का दूसरा पहलू भी कम रोचक नहीं है। आजकल किसी भी घटना के कुछ ही मिनटों बाद उस पर रील बन जाती है। बारिश हो जाए तो रील, धूप निकल आए तो रील, परीक्षा खत्म हो जाए तो रील और परिणाम आ जाए तो भी रील। ऐसा लगता है कि जीवन का हर क्षण कैमरे के लिए ही घटित हो रहा है। ऐसे में यदि स्कूल भी रील निर्माण की प्रयोगशाला बन जाएं, तो कल्पना कीजिए कि गणित की कक्षा में कोई छात्र समीकरण हल करने से पहले कैमरा ऑन करके बोले—"दोस्तों, आज मैं आपको ऐसा फॉर्मूला बताने वाला हूं जिसे देखकर आपका दिमाग घूम जाएगा।"

देशसेवा में बलिदान की प्रेरक मिसाल डॉ. मुखर्जी

> डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने शिक्षाविद, उद्योगमंत्री व जनसंघ के संस्थापक के रूप में देशहित को प्राथमिकता दी। उनमें राष्ट्रवाद व जनसेवा का संगम था। उनका उद्देश्य देश की एकता-अखंडता की रक्षा रहा। ताउम्र राष्ट्रहित में संघर्ष किया व बलिदान की प्रेरक मिसाल कायम की। आज उनकी 125वीं जयंती के मौके पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उनकी सोच के मुताबिक देश में एकजुटता के लिए प्रयास करें।

आज का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है। आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जन्म-जयंती मना रहे हैं। उनका जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। डॉ. मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वत्ता, जनसेवा व उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था। आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने गुण एक साथ मिलते हैं। श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधा संपन्न जीवन आसानी से मिल सकता था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी। लेकिन सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना। उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते। इस सफर में उन्हें कई गहरे दुख झेलने पड़े। पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया। लेकिन दुखद परिस्थितियों में भी अपना हौसला कमजोर नहीं पड़ने दिया। उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया।

डॉ. मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता-अखंडता की रक्षा करना था। देश विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई। कुछ वर्ष बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर संघर्ष किया। जेल व नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी। जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे। इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है। डॉ. मुखर्जी का बलिदान ऐसा ही था। आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस

उद्देश्य के लिए बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। दशकों बाद, वर्ष 2019 में आर्टिकल 370 और 35(A) को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी।

डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को प्राथमिकता दी। इसके लिए मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो तत्कालीन सोच से काफी आगे थीं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने व शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किए, जो राष्ट्रहित और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप थे। शिक्षाविदों के एक सम्मेलन में डॉ. मुखर्जी ने कहा था, 'शिक्षण संस्थानों को केवल बाबू या कम वेतन वाले कर्मचारी तैयार करने की फैक्ट्री समझना गलत है। विद्यार्थियों को ऐसे तैयार करना होगा कि वे नेतृत्व की भूमिका निभा सकें। स्वशासी संस्थाओं-म्युनिसिपल कॉर्पोरेशंस, प्रांतीय और केंद्रीय विधायिकाओं -में बड़ी जिम्मेदारी निभाने को तैयार हों। साथ ही वित्त, व्यापार और उद्योग क्षेत्रों में प्रतिभा दिखा सकें।'

कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने नेतृत्व में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इनमें लाइब्रेरी सुविधाओं में सुधार, विज्ञान रिसर्च को बढ़ावा, ऐतिहासिक वस्तुओं के अध्ययन को प्रोत्साहन और कृषि से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करना शामिल था। खेलकूद, टीचर्स ट्रेनिंग और स्टूडेंट वेलफेयर जैसे क्षेत्रों पर खास ध्यान दिया। विद्यार्थियों में अपनी यूनिवर्सिटी के प्रति गर्व का भाव विकसित हो, इसके लिए उन्होंने 24 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की। गुरुदेव टैगोर से विश्वविद्यालय के लिए गीत लिखने का अनुरोध भी किया था।

उनके जीवन के बाद के वर्षों में इस भावना का एक और उदाहरण है, जब उन्होंने भारतीय जनसंघ बनाने का निर्णय लिया। तब देश में कांग्रेस पार्टी का बोलबाला था। उन्होंने महसूस किया कि देश को ऐसे नए विकल्प की जरूरत है, जो भारत की प्रगति की बात भी करे और सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा रहे। शायद इसी के मद्देनजर पार्टी का चुनाव चिह्न 'दीपक' यानी मिट्टी का दीया रखा। अकेला दीया भले ही छोटा लगे, लेकिन उसमें अपने आसपास का गहरा अंधकार मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है। डॉ. मुखर्जी का देश के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्यकाल बेहद अहम रहा। उन्हें ऐसे राजनेता के रूप में याद किया जाता है, जिनका विजन विराट था। वे उद्योग को नवस्वतंत्र भारत के लोगों में सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास का संचार करने का माध्यम मानते थे। वेल्थ व वैल्यू क्रिएशन का महत्व समझते थे। उन्होंने दामोदर वैली कॉर्पोरेशन, सिंदरी उर्वरक संयंत्र व मजबूत औद्योगिक नीति जैसी ऐतिहासिक पहल की। इसके जरिये आधुनिक औद्योगिक भारत की नींव रखी। वहीं सुनिश्चित किया कि भारत के पारंपरिक सामर्थ्य की उपेक्षा न हो। वे हथकरघा, कुटीर उद्योग, कारीगरों, कपड़ा उद्योग के श्रमिकों के हित के प्रबल समर्थक थे।

यहां मैं एक निजी अनुभव भी साझा करना चाहता हूं। आत्मनिर्भर भारत के विज़न के साथ जिस सिंदरी संयंत्र की स्थापना के लिए डॉ. मुखर्जी ने अथक प्रयास किए थे, उसकी दशकों सत्ता में रहने वाले लोगों ने उपेक्षा की। मुझे इस बात का संतोष कि हमारी सरकार को उसके पुनरुद्धार का सौभाग्य मिला। उस कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे सार्वजनिक जीवन के सबसे विशेष व अविस्मरणीय क्षणों में से एक बन गया।

भारत की परंपरा सदियों से संवाद और विचार-विमर्श का सम्मान करती आई है। डॉ. मुखर्जी इस लोकतांत्रिक भावना के सशक्त प्रतीक थे। उन्होंने पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में शामिल होना स्वीकार किया, क्योंकि वे मानते थे कि आजादी के शुरुआती वर्षों में राष्ट्र-निर्माण का दायित्व राजनीतिक मतभेदों से ऊपर है। निष्ठा व रचनात्मक दृष्टिकोण से जिम्मेदारियां निभायीं लेकिन जब लगा कि राष्ट्रीय महत्व के कुछ प्रश्नों पर देशहित में अलग मार्ग अपनाना जरूरी है, तो गरिमा से पद त्याग दिया। इसके बाद अपना जीवन वह राजनीतिक लक्ष्य हासिल करने को समर्पित कर दिया, जिसे वे राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे।

75 वर्ष पहले पं. नेहरू पहला संविधान संशोधन लेकर आए। इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर प्रहार माना गया। तब डॉ. मुखर्जी इसके मुखर आलोचक रहे। वे समझ चुके थे कि कांग्रेस किस हद तक जा सकती है। उनकी यह आशंका सही साबित हुई। जो पार्टी 75 वर्ष पूर्व पहला संविधान संशोधन लेकर आई थी, उसी ने 1975 में देश पर आपातकाल थोंपा। वहीं, 50 वर्ष पूर्व 42वां संविधान संशोधन अधिनियम लाकर एक बार फिर लोकतांत्रिक मूल्यों पर कुठाराघात किया।

डॉ. मुखर्जी मानवीय संवेदनाओं और सेवाभाव के लिए भी जाने जाते हैं। वर्ष 1943 में जब बंगाल भीषण अकाल की त्रासदी से जूझ रहा था, तब उन्होंने पीड़ितों की सेवा में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया। सुनिश्चित किया कि लोगों को भोजन मिल सके। कई कैंटीन और रिलीफ सेंटर शुरू किए। एक ओर वे लोगों की पीड़ा से व्यथित थे, दूसरी ओर ब्रिटिश हुकूमत की असंवेदनशीलता से आक्रोशित थे। उन्होंने अपनी पीड़ा व्यक्त करने को किताब 'पंचाशेर मन्वंतर' लिखी। 1942 में जब मेदिनीपुर में भीषण चक्रवात आया, तब प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों का नेतृत्व किया।

कोलकाता के एक कॉलेज में युवाओं को संबोधित करते हुए डॉ. मुखर्जी ने आग्रह किया था, 'आप जो भी कार्य करें, उसे पूरी गंभीरता, लगन और ईमानदारी से करें। किसी भी काम को कभी अधूरा न छोड़ें। तब तक स्वयं को संतुष्ट न मानें, जब तक आपने उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान न दे दिया हो।' आज देश विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम प्रतिदिन उस भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयास करें, जिसकी उन्होंने परिकल्पना की थी। एक ऐसा भारत जो सशक्त हो, एकजुट हो, आत्मविश्वास से भरपूर और संवेदनशील हो। देश के युवाओं पर मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बढ़-चढ़कर भागीदारी करेंगे और इस संकल्प को साकार करने को पूरी ऊर्जा के साथ जुट जाएंगे।

प्रेरणा

जब मां ने मिट्टी को किताब बनाया: संघर्ष, शिक्षा और एक अधूरे सपने के अमर होने की कहानी

दीपावली का पर्व नजदीक था। पूरा शहर रोशनी के स्वागत की तैयारियों में जुटा हुआ था। बाजार रंग-बिरंगी झालरों, मिठाइयों और पटाखों से सज चुके थे। पटाखा फैक्टरियों में मजदूर दिन-रात काम कर रहे थे ताकि त्योहार से पहले हर ऑर्डर समय पर पूरा हो सके। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। एक दोपहर शहर की सबसे बड़ी पटाखा फैक्टरी में अचानक भीषण विस्फोट हुआ। कुछ ही क्षणों में चारों ओर धुएं, आग और चीख-पुकार का भयावह मंजर फैल गया। कई मजदूरों को बाहर निकालने की कोशिश की गई, लेकिन पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। उन पांच मजदूरों में दर्शन लाल भी था, जो अपने परिवार की जिंदगी का एकमात्र सहारा था। दर्शन की मृत्यु के साथ ही उसकी पत्नी रत्ना की दुनिया जैसे थम गई। चार वर्ष का मासूम बेटा सोनू बार-बार दरवाजे की ओर देखता और मासूमियत से पूछता, "मां, पिताजी कब आएंगे?" इस सवाल का जवाब रत्ना के पास नहीं था। वह केवल बेटे को सीने से लगा लेती और आंसुओं को अपनी पलकों के भीतर ही रोक लेने की कोशिश करती। गरीबी पहले भी थी, लेकिन अब उसके साथ अकेलापन और असुरक्षा भी जुड़ गई थी।

लोगों ने अपनी-अपनी तरह से सलाह देना शुरू कर दिया। किसी ने कहा कि रत्ना अभी जवान है, उसे दूसरा विवाह कर लेना चाहिए। किसी ने सुझाव दिया कि बेटे को किसी रिश्तेदार के पास छोड़कर नई जिंदगी शुरू कर दे। लेकिन रत्ना के लिए जीवन केवल अपने बारे में नहीं था। उसे अपने पति की वह बात बार-बार याद आती थी, जिसमें दर्शन कहा करता था, "मैं चाहे मजदूर हूं, लेकिन मेरा बेटा मजदूर नहीं रहेगा। मैं उसे पढ़ाकर बड़ा अधिकारी बनाऊंगा।" यही सपना अब रत्ना की जिंदगी का उद्देश्य बन गया।

रोजी-रोटी की सबसे बड़ी समस्या सामने थी। दसवीं तक पढ़ी रत्ना नौकरी की तलाश में कई जगह गई, लेकिन हर जगह उसकी मजबूरी से ज्यादा उसकी मजबूरी का फायदा उठाने वाले लोग मिलते रहे। उसे जल्दी ही समझ में आ गया कि सम्मान बचाकर नौकरी मिलना आसान नहीं होगा। कुछ दिन उसने अपने मायके में रहने का प्रयास किया, लेकिन वहां भी माता-पिता खुद मजदूरी करके किसी तरह घर चला रहे थे। वह जानती थी कि उनका स्नेह असीम है, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति उसे और उसके बेटे को संभालने लायक नहीं थी। इसलिए वह वापस अपने छोटे से घर लौट आई, जहां हर कोने में दर्शन की यादें बसी थीं। पड़ोस में रहने वाली सावित्री ने उसका दुख समझा। वह स्वयं कई घरों में चौका-बर्तन करके अपने परिवार का पालन-पोषण करती थी। उसने रत्ना को भी कुछ घरों में काम दिला दिया। शुरुआत में रत्ना को संकोच हुआ, लेकिन उसने जल्दी ही समझ लिया कि मेहनत से बड़ा कोई सम्मान नहीं होता। वह सुबह से शाम तक लोगों के घरों में बर्तन मांजती, झाड़ू-पोंछा करती और फिर थकी हुई घर लौटकर बेटे की पढ़ाई में लग जाती।

उसके पास न कॉपियां थीं, न किताबें और न स्लेट। उसने घर के बाहर की कच्ची जमीन को ही स्लेट बना लिया। पास की झाड़ी से एक पतली लकड़ी तोड़ी और उसे कलम बना दिया। मिट्टी पर अक्षर उभरते, फिर मिट जाते, लेकिन वे सोनू की स्मृति में हमेशा के लिए अंकित हो जाते। रत्ना अक्सर कहती, "बेटा, गरीबों की सबसे बड़ी पूंजी उनकी मेहनत और शिक्षा होती है। इसे कभी मत छोड़ना।"

सोनू असाधारण रूप से मेधावी था। उसकी स्मरण शक्ति इतनी तेज थी कि एक बार पढ़ी हुई बात उसे लंबे समय तक याद रहती। जब उसकी मां काम पर जाती, तो वह पास के सरकारी स्कूल के बाहर जाकर बैठ जाता। स्कूल की इमारत जर्जर थी, इसलिए कक्षाएं पेड़ के नीचे लगती थीं। सोनू दूर बैठकर मास्टर जी की बातें सुनता और मिट्टी पर वही लिखकर अभ्यास करता।

एक दिन स्कूल के शिक्षक मुरलीधर की नजर उस बालक पर पड़ी। उन्होंने देखा कि बाहर बैठा बच्चा वही पाठ लिख रहा है जो वे कक्षा में पढ़ा रहे थे। उन्होंने उसे पास बुलाया और पूछा, "तुम स्कूल में क्यों नहीं पढ़ते?" सोनू ने सहजता से उत्तर दिया, "मां के पास फीस देने के पैसे नहीं हैं।" मुरलीधर के मन को यह उत्तर भीतर तक छू गया। उन्होंने उसी दिन निर्णय लिया कि इस बच्चे की प्रतिभा गरीबी के कारण नहीं रुकेगी। अगले दिन से सोनू स्कूल का छात्र बन गया। फीस, किताबें, कॉपियां और यूनिफॉर्म की व्यवस्था स्वयं मुरलीधर ने की। उन्होंने रत्ना से कहा, "तुम्हारा बेटा केवल तुम्हारा नहीं, समाज की अमानत है।" रत्ना ने उस रात वर्षों बाद चैन की नींद ली। उसे लगा कि शायद भगवान ने दर्शन की जगह किसी और को उसके बेटे का मार्गदर्शक बनाकर भेज दिया है।

समय अपनी गति से आगे बढ़ता रहा। सोनू हर परीक्षा में प्रथम आता गया। उसकी मेहनत और विनम्रता ने सभी शिक्षकों का दिल जीत लिया। आर्थिक तंगी अब भी थी, लेकिन आत्मविश्वास पहले से कहीं अधिक मजबूत हो चुका था। आठवीं कक्षा में पहुंचते ही उसने छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। इससे जो थोड़ी-बहुत आय होती, उससे अपनी पढ़ाई का खर्च निकालता और मां का हाथ भी बंटाता। दसवीं बोर्ड परीक्षा में उसने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। समाचार पत्रों में उसकी तस्वीर छपी। पत्रकारों ने जब उसकी सफलता का रहस्य पूछा तो उसने केवल इतना कहा, "मेरी मां ने मुझे कभी गरीबी का एहसास नहीं होने दिया। उन्होंने मुझे हमेशा सपने देखने की हिम्मत दी।"

आगे की पढ़ाई छात्रवृत्ति के सहारे पूरी हुई। उसने विश्वविद्यालय में स्वर्ण पदक प्राप्त किया, शोध किया और शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। कुछ वर्षों बाद वह प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बना और फिर अपनी योग्यता के बल पर कुलपति नियुक्त हुआ।

कुलपति बनने के बाद अपने पहले संबोधन में उसने कहा, "मेरे जीवन की सबसे पहली पुस्तक मिट्टी थी, मेरी पहली कलम लकड़ी की डंडी थी और मेरी पहली शिक्षिका मेरी मां थीं। यदि उन्होंने परिस्थितियों के सामने हार मान ली होती, तो मैं आज यहां खड़ा नहीं होता।"

उसके इस भाषण ने देशभर में लाखों लोगों को प्रेरित किया। उसने आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति योजना शुरू की, ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय स्थापित करवाए और ऐसे बच्चों की पहचान करने का अभियान चलाया, जिनकी प्रतिभा आर्थिक अभाव के कारण दब रही थी।

कुछ वर्षों बाद शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उसे अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया। समारोह में जब उसे मंच पर बुलाया गया, तो उसने सबसे पहले अपनी मां को अपने साथ खड़ा किया। पुरस्कार ग्रहण करने के बाद उसने वह सम्मान अपनी मां के हाथों में रखते हुए कहा, "यह पुरस्कार मेरी सफलता का नहीं, मेरी मां के त्याग, श्रम और विश्वास का सम्मान है।"

बिहार में सामाजिक बदलाव के संकेत

जाति और पंथ के बिना आज देश में राजनीति की कल्पना बेमानी है। बिहार में जातिवाद का असर कुछ ज्यादा ही दिखता है, लेकिन इसी बिहार में हाल में हुई एक घटना की प्रतिक्रिया में उभरा जनाक्रोश इसके ठीक उलट है। इसमें जाति और पंथ की सीमाएं टूट गई हैं। भोजपुर जिले में पुलिस के कथित एनकाउंटर में मारे गए युवक भरत तिवारी के लिए न्याय की खातिर उतरे लोगों के बीच कोई जातीय दीवार नजर नहीं आ रही। इससे इन्कार नहीं कि भारतीय समाज में ऊंच-नीच का भाव रहा है। फिर भी समाज में सद्भाव, सहयोग और मेलजोल की गहरी परंपरा है। सामाजिक मामलों में कई बार जाति की दीवारें टूटती भी नजर आती हैं, लेकिन जैसे ही चुनाव और राजनीति का मसला सामने आता है, जातीय सोच पूरी ताकत से उभर आता है। बिहार इस मामले में कुछ ज्यादा ही बदनाम है। ऐसे माहौल में अगर अगड़े समुदाय के भरत तिवारी की पुलिस के हाथों हुई कथित हत्या के खिलाफ सड़कों पर दलित और पिछड़े समुदाय तक के लोग उतर आएं तो मानना पड़ेगा कि पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था अब भी देश की रगों में बह रही है। बस उसे जगाने की जरूरत है। हालांकि भरत तिवारी की कथित पुलिस मुठभेड़ को जातीय रंग देने की कोशिश भी हुई। हैरत की बात है कि इसके पीछे राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी नजर आए। जातिवादी चश्मे से इस घटना को देखते हुए उन्होंने कह दिया कि भरत तिवारी चूंकि ब्राह्मण था, इसीलिए अगड़ा समाज आक्रोशित है। उसकी जगह कोई दलित और पिछड़ा होता तो इस मामले को इतना तूल नहीं दिया जाता। मांझी के इस बयान ने जातिवादी खोल से बाहर निकले जनाक्रोश की आग में घी का काम किया। विरोध में भरत के गांव बिलौटी ही नहीं, आस-पड़ोस के दलित और पिछड़े परिवार भी गुस्से से भर उठे। गंगा के कटान से प्रभावित ये लोग मांझी की लानत-मलानत में उतर आए।

उन्होंने उलटे मांझी से ही पूछ लिया कि हमारा नेता होने के बावजूद उन्होंने उनकी हालत जानने की कोशिश क्यों नहीं की। लोगों का कहना था कि जिसके खिलाफ वे बोल रहे हैं, साधनहीन होने के बजाय वही व्यक्ति उनके साथ खड़ा रहा। बिहार में 21 साल पहले इसी तरह जाति और पंथ का बंधन टूटा था। 2005 में पटना से पंद्रह वर्षीय किसलय का अपहरण कर लिया गया। उस अपहरण के खिलाफ तब बिहार का पूरा समाज मुखर होकर आज उठा रहा था। बिहार विधानसभा चुनाव के प्रचार में उतरे अटल बिहारी वाजपेयी का बयान तब जन-जन की जुबान पर चढ़ गया था। उन्होंने कहा था, मेरा किसलय लौटा दो। भोजपुर जिले के बिलौटी गांव के भरत तिवारी की कथित मुठभेड़ में हत्या के बाद एक बार फिर बिहार का समाज ठीक उसी तरह जाति और समुदाय के खांचों को तोड़ सत्य और न्याय के लिए साथ खड़ा नजर आ रहा है।

भोजपुर जिले का जवानिया गांव गंगा के ठीक किनारे है। इस गांव को पिछले साल गंगा की लहरों ने तकरीबन लील लिया। कटान से प्रभावित लोगों को अपने घर-खेत गंवाने पड़े, तब से ज्यादातर लोगों की स्थिति बदहाल है। सरकार की ओर से प्रभावितों को घर के लिए जमीन और पैसे तो दिए गए, लेकिन जो जगह उन्हें मिली, वह गड्ढे वाली है। बाकी सहूलियतें भी न के बराबर मिली हैं। इनकी बस्ती में हाल के दिनों तक चापाकल तक नहीं थे, कुछ थे भी तो उनमें पानी नहीं आ रहा था। इन्हीं बदहाल लोगों की आवाज बनकर भरत तिवारी सक्रिय थे। बिलौटी और जवानिया के उजड़े लोगों का कहना है कि उन्हें भरत तिवारी की ही वजह से थोड़ी-बहुत सुविधाएं मिली हैं। इनके लिए वे ही प्रशासन से लड़ते रहे। कटान पीड़ित जवानिया गांव वालों का दर्द है कि उन्हें पानी से निकालकर फिर से पानी में ही बसा दिया गया है। उन्हें डर है कि फिर बारिश और बाढ़ आई तो उन्हें उजड़ना पड़ सकता है। भरत तिवारी इन्हीं मुद्दों को उठा रहे थे। गांव वाले मानते हैं कि प्रशासन के प्रति भरत के मन में गुस्सा था।

गत दिनों भरत की शव यात्रा में उमड़ी भीड़ बिहार के नए समाज का आईना कही जा सकती है। हालांकि बिहार सरकार का रवैया पारंपरिक रहा। वह प्रशासन के ही बचाव में नजर आई, लेकिन जनाक्रोश देखते हुए उसे झुकना पड़ा। भरत की हत्या की जांच के लिए पटना हाई कोर्ट के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश विनोद कुमार सिन्हा की अगुआई में जांच आयोग गठित किया गया है। इस बीच आरोपित पुलिस वालों के खिलाफ भी एफआइआर दर्ज कर ली गई है, जिनमें डीएसपी और शाहपुर के थानेदार भी शामिल हैं। स्थानीय स्तर पर अगड़े के पक्ष में दलित और पिछड़ों के उतरने से जाति के आधार पर चाल चलने वाली राजनीति को परेशानी जरूर महसूस हो रही होगी, लेकिन भूलना नहीं चाहिए कि समाज का सोया हुआ सकारात्मक आत्मा ऐसे ही जागता है और बदलाव की बुनियाद बनती है। बस उसके लिए एक चिंगारी की जरूरत होती है। उम्मीद की जा सकती है कि भरत तिवारी की हत्या के बाद उभरा जनाक्रोश प्राचीन भारतीय सामाजिक सोच को उभारने का प्रस्थान बिंदु बनेगा, जिसमें समायोजन होगा और मेलजोल भी।

अभियान

अधर्म के अंत और धर्म की विजय का दिव्य संदेश: भगवान कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध का सनातन रहस्य

सनातन धर्म की पौराणिक कथाएँ केवल देवताओं और असुरों के युद्ध का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि वे जीवन के गहरे आध्यात्मिक, नैतिक और दार्शनिक सिद्धांतों को भी सरल रूप में प्रस्तुत करती हैं। इन्हीं प्रेरणादायक कथाओं में भगवान कार्तिकेय और तारकासुर के युद्ध की कथा विशेष महत्व रखती है। यह केवल एक असुर के वध की घटना नहीं, बल्कि अहंकार पर विनम्रता, अन्याय पर धर्म, अराजकता पर व्यवस्था और अधर्म पर सत्य की विजय का कालजयी संदेश है। भगवान कार्तिकेय, जिन्हें स्कंद, कुमारस्वामी, षण्मुख, मुरुगन, सुब्रह्मण्य और देवसेनापति जैसे अनेक नामों से जाना जाता है, केवल भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र ही नहीं, बल्कि देवताओं की सेना के सर्वोच्च सेनापति और धर्मरक्षा के प्रतीक भी माने जाते हैं। उनका जन्म स्वयं एक महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ था और वह उद्देश्य था अत्याचारी तारकासुर का अंत कर संपूर्ण सृष्टि में पुनः संतुलन स्थापित करना।

प्राचीन काल में तारकासुर नाम का एक अत्यंत शक्तिशाली असुर था। उसमें अपार बल, बुद्धि और तप करने की अद्भुत क्षमता थी। वह जानता था कि केवल शारीरिक शक्ति से संसार पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, इसलिए उसने कठोर तपस्या का मार्ग अपनाया। वर्षों तक उसने भगवान ब्रह्मा की आराधना की। उसकी तपस्या इतनी कठिन थी कि देवता भी आश्चर्यचकित हो गए। अंततः ब्रह्मा जी उसके सामने प्रकट हुए और वरदान मांगने को कहा।

तारकासुर अत्यंत चतुर था। उसने अमरत्व नहीं मांगा, क्योंकि वह जानता था कि सृष्टि का नियम किसी को अमर होने की अनुमति नहीं देता। उसने ऐसा वरदान मांगा जिससे उसकी मृत्यु लगभग असंभव हो जाए। उसने कहा कि उसकी मृत्यु केवल भगवान शिव के पुत्र के हाथों ही हो। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहकर उसे यह वरदान प्रदान कर दिया। तारकासुर का यह वरदान उस समय लगभग अमरत्व के समान था। इसका कारण यह था कि माता सती के आत्मदाह के बाद भगवान शिव संसार से विरक्त होकर गहन समाधि में लीन हो चुके थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था और विवाह करने की कोई संभावना दिखाई नहीं देती थी। इसलिए तारकासुर को विश्वास था कि जब शिव का पुत्र कभी जन्म ही नहीं लेगा, तब उसकी मृत्यु भी कभी नहीं होगी।

वरदान प्राप्त करते ही तारकासुर के भीतर विनम्रता समाप्त हो गई और अहंकार का जन्म हो गया। उसने अपनी शक्ति का उपयोग लोककल्याण के लिए नहीं, बल्कि अत्याचार के लिए करना शुरू कर दिया। उसने स्वर्ग लोक पर आक्रमण कर दिया। इंद्र सहित अनेक देवताओं को पराजित कर दिया। यज्ञ, तप, वेद अध्ययन और धर्म के कार्य बाधित होने लगे। ऋषि-मुनि भयभीत होकर अपने आश्रम छोड़ने लगे। पृथ्वी, स्वर्ग और अनेक लोकों में असुरों का आतंक फैल गया।

जब देवताओं की सभी शक्तियाँ निष्फल हो गईं, तब वे ब्रह्मा जी के पास पहुंचे। उन्होंने तारकासुर के अत्याचारों से मुक्ति का उपाय पूछा। ब्रह्मा जी ने स्पष्ट कहा कि उनके द्वारा दिया गया वरदान बदला नहीं जा सकता। अब केवल भगवान शिव के पुत्र के जन्म से ही इस संकट का समाधान संभव है। इसी समय हिमालय की पुत्री पार्वती भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या कर रही थीं। उनका यह तप केवल व्यक्तिगत इच्छा नहीं था, बल्कि समस्त सृष्टि के कल्याण का माध्यम बनने वाला था। वर्षों की कठिन तपस्या, सेवा, समर्पण और अटूट भक्ति के बाद भगवान शिव ने माता पार्वती को स्वीकार किया। दोनों का दिव्य विवाह संपन्न हुआ, जिसे देवताओं ने केवल एक पारिवारिक उत्सव नहीं, बल्कि सृष्टि की रक्षा का शुभारंभ माना।

समय आने पर भगवान शिव के तेज से एक दिव्य ऊर्जा प्रकट हुई। अनेक पौराणिक ग्रंथों में उनके जन्म का वर्णन अलग-अलग रूपों में मिलता है। कहीं बताया गया है कि अग्निदेव और गंगा ने उस दिव्य तेज को सुरक्षित रखा, तो कहीं छह कृतिकाओं द्वारा उनके पालन-पोषण का उल्लेख मिलता है। इसी कारण उनका नाम कार्तिकेय पड़ा। छह कृतिकाओं द्वारा पालन किए जाने के कारण उन्हें षण्मुख या षडानन भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने छह मुख धारण किए थे।

बाल्यावस्था से ही भगवान कार्तिकेय असाधारण तेज, अद्भुत साहस और विलक्षण युद्धकौशल के धनी थे। उन्होंने वेद, शास्त्र, धनुर्वेद और दिव्य अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान अत्यंत कम आयु में प्राप्त कर लिया। उनकी बुद्धि, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता को देखकर सभी देवता प्रभावित हुए। भगवान शिव ने उन्हें दिव्य शक्ति अस्त्र प्रदान किया, जिसे दक्षिण भारत में 'वेल' के नाम से जाना जाता है। यह केवल एक हथियार नहीं, बल्कि ज्ञान, सत्य और दिव्य शक्ति का प्रतीक माना जाता है।

देवताओं ने भगवान कार्तिकेय को अपनी संपूर्ण सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया। तभी से वे 'देवसेनापति' कहलाए। इतनी कम आयु में समस्त देवसेना का नेतृत्व करना इस बात का संकेत था कि नेतृत्व उम्र से नहीं, बल्कि योग्यता, साहस और चरित्र से प्राप्त होता है।

जब युद्ध का समय आया तो तारकासुर अपने वरदान के कारण पूर्णतः निश्चिंत था। उसे विश्वास था कि कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। लेकिन जब उसने युद्धभूमि में युवा कार्तिकेय को देखा तो पहले उसने उनका उपहास किया। उसे लगा कि एक बालक उसका सामना नहीं कर सकता। यही उसका सबसे बड़ा भ्रम था। युद्ध कई दिनों तक चला। तारकासुर ने अपनी समस्त मायावी शक्तियों का प्रयोग किया। उसने अनेक भ्रम उत्पन्न किए, पर्वतों को अस्त्र बनाया, अग्नि और अंधकार फैलाया, किंतु भगवान कार्तिकेय अद्भुत धैर्य और संयम के साथ प्रत्येक आक्रमण का उत्तर देते रहे। अंततः उचित अवसर देखकर उन्होंने भगवान शिव द्वारा प्रदत्त दिव्य शक्ति अस्त्र का प्रयोग किया। वह अस्त्र सीधा तारकासुर के हृदय में जाकर लगा और उसी क्षण उसका अंत हो गया।

तारकासुर के वध के साथ ही तीनों लोकों में शांति स्थापित हुई। देवताओं ने पुष्पवर्षा की। ऋषियों ने यज्ञ पुनः आरंभ किए। धर्म और न्याय की पुनः स्थापना हुई। भगवान कार्तिकेय को धर्मरक्षक और देवताओं के महान सेनापति के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ।

इस कथा का आध्यात्मिक अर्थ अत्यंत गहरा है। तारकासुर केवल एक असुर नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर मौजूद अहंकार, लोभ, क्रोध, स्वार्थ और शक्ति के दुरुपयोग का प्रतीक है। जब व्यक्ति ज्ञान और शक्ति प्राप्त करने के बाद विनम्रता खो देता है, तब उसके भीतर का तारकासुर जागृत हो जाता है। दूसरी ओर भगवान कार्तिकेय विवेक, साहस, अनुशासन, संयम और धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब मनुष्य अपने भीतर इन गुणों का विकास करता है, तभी वह अपने आंतरिक तारकासुर पर विजय प्राप्त कर सकता है।

भगवान कार्तिकेय का वाहन मयूर भी अत्यंत प्रतीकात्मक है। मयूर अहंकार और विषैले सर्पों पर नियंत्रण का प्रतीक माना जाता है। इसका संदेश है कि जो व्यक्ति अपने भीतर के विष अर्थात क्रोध, ईर्ष्या और अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक अर्थों में विजयी होता है।

उनके हाथ में धारण किया गया शक्ति अस्त्र केवल युद्ध का साधन नहीं, बल्कि एकाग्रता, ज्ञान और सत्य की शक्ति का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि जीवन के संघर्षों में केवल शारीरिक बल पर्याप्त नहीं होता। विवेक, आत्मसंयम और सही निर्णय ही वास्तविक विजय दिलाते हैं।

दक्षिण भारत में भगवान कार्तिकेय की विशेष आराधना की जाती है। तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक सहित अनेक राज्यों में वे भगवान मुरुगन के रूप में अत्यंत लोकप्रिय हैं। पलानी, तिरुचेंदूर, स्वामिमलाई, तिरुपरंकुंद्रम, पझमुदिरचोलै और तिरुत्तनी के छह प्रमुख मंदिरों को 'आरुपडै वीडु' कहा जाता है। इन तीर्थों का संबंध भगवान कार्तिकेय के जीवन और उनके विभिन्न दिव्य कार्यों से जोड़ा जाता है। उत्तर भारत में भी स्कंद षष्ठी, कार्तिक पूर्णिमा और अन्य अवसरों पर उनकी पूजा की जाती है।

शिव महापुराण की रुद्र संहिता, स्कंद पुराण, कुमारसंभव तथा अन्य अनेक ग्रंथों में भगवान कार्तिकेय के जन्म और तारकासुर वध का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर का प्रत्येक अवतार किसी न किसी विशेष उद्देश्य से होता है। भगवान कार्तिकेय का अवतरण भी धर्म की रक्षा, देवताओं की सुरक्षा और अधर्म के विनाश के लिए हुआ था।

आधुनिक जीवन में भी यह कथा उतनी ही प्रासंगिक है जितनी हजारों वर्ष पहले थी। आज तारकासुर का रूप बदल गया है। वह कभी भ्रष्टाचार बनकर सामने आता है, कभी अहंकार, हिंसा, लालच, नशा, अन्याय या अनैतिकता के रूप में समाज को चुनौती देता है। इन सभी बुराइयों से संघर्ष करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर भगवान कार्तिकेय जैसे साहस, अनुशासन, विवेक और कर्तव्यनिष्ठा का विकास करना होगा।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'व्यथा से व्यवस्था' के विजन से विचरणशील एवं घुमंतू जातियों को मिला सम्मानजनक 'स्थायी पता' तथा नई पहचान : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से पानसर में 'शांति निवास' छात्रावास का उद्घाटन एवं 'वल्लभ विद्याविहार' विद्यालय का लोकार्पण संपन्न हुआ

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ विचरणशील एवं घुमंतू जाति का सर्वांगीण विकास करना पुण्य का भगीरथ कार्य है, इस पवित्र सेवा-यज्ञ में सहभागी बनना हम सभी के लिए गौरव की बात है

▸▸ वैश्विक स्तर पर सेमीकंडक्टर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ने के साथ-साथ देश के सुदूरवर्ती व्यक्ति की चिंता करना ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वास्तविक संवेदनशीलता है

▸▸ समाज के सुदूरवर्ती व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा से जोड़कर ही 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' का सपना साकार होगा

▸▸ घरविहीन तथा अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे विचरणशील एवं घुमंतू जाति के लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करने वाली संस्था वीएसएसएम है : गुजरात भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से रविवार को कलोल तहसील के पानसर में 'विचरता समुदाय समर्थन मंच' एवं डॉ. के. आर. ओंफ फाउंडेशन द्वारा संचालित 'शांति निवास' छात्रावास का उद्घाटन तथा 'वल्लभ विद्याविहार' विद्यालय का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर गुजरात भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सहित विशेष अतिथियों ने संस्थान के विद्यार्थियों को पुस्तकें भेंट कर उनको प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का बचपन अत्यंत साधारण एवं गरीब परिवार में बीता था, लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी परिस्थितियों की व्यथा को सामने नहीं रखा। उन्होंने हमेशा 'व्यथा से व्यवस्था' की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग अपनाया। प्रधानमंत्री का चिंतन सदैव यही रहा है कि समाज में ऐसी स्थायी व्यवस्था विकसित की जाए, जिससे गरीबों और वंचितों की पीड़ा का स्थायी समाधान हो सके और उनकी व्यथा हमेशा के लिए समाप्त हो जाए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि वर्षों से घुमंतू जीवन व्यतीत कर रहे हमारी विचरणशील एवं घुमंतू जाति के भाई-बहनों को समाज में सम्मानजनक स्थान और अपना स्थायी 'सरनामा' (पता) मिले, इस दिशा में पहला सशक्त कदम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ही उठाया था। उनके इसी विजन का परिणाम है कि आज पूरे गुजरात में इस क्षेत्र में अनेक अभूतपूर्व एवं जनकल्याणकारी कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब किसी व्यक्ति को अपना स्थायी पता मिलता है, तभी उसकी वास्तविक पहचान स्थापित होती है। और जब पहचान मिलती है, तभी वह समाज में अपने सभी अधिकार सहजता से प्राप्त कर सकता है। आज संस्था द्वारा वंचित समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए किए जा रहे ये सभी भगीरथ प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि सत्कार्य में केवल छोटा-सा प्रयास करना भी अत्यंत पुण्य का कार्य है। उन्होंने कहा कि जरा उन परिवारों के बारे में सोचिए, जो प्रतिदिन इस चिंता के साथ जीवन बिताते हैं कि कल सुबह कहां जाएंगे? रहने के लिए जगह मिलेगी या नहीं? भोजन की व्यवस्था कैसे होगी और उनके बच्चों का भविष्य क्या होगा? मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसी अनिश्चित परिस्थितियों में जीवनयापन कर रहे हमारी विचरणशील एवं घुमंतू जाति के भाई-बहनों के लिए यदि कोई संस्था उनके रहने से लेकर बच्चों की शिक्षा और भोजन तक की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराती है, तो यह वास्तव में यह कितने पुण्य का कार्य है! मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि हमारे जीवन का एक पूरा चक्र होता है, जिसके दौरान हम सतत प्रगति की ओर आगे बढ़ते हैं। लेकिन जब जीवन में स्थिरता आती है और व्यक्ति किसी उचित पद या स्थान पर पहुंचता है, तब उसके मन में स्वाभाविक रूप से यह भावना जागती है कि अब उसे समाज के लिए भी कुछ करना चाहिए। समाज और लोगों के हित में पानी की टंकी बनवाना, विद्यालय की स्थापना करना या अस्पतालों के कार्यों में सहयोग देना जैसे सेवा-भाव तभी उत्पन्न होते हैं, जब व्यक्ति स्वयं जिन कठिन परिस्थितियों से गुज़रा हो, उन्हीं परिस्थितियों में आज भी जीवन व्यतीत कर रहे समाज के सुदूरवर्ती व्यक्ति की चिंता करता है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि अपने अतीत को भूले बिना समाज के वंचित वर्ग के लिए कुछ कर गुजरने की यही संवेदनशीलता और सेवा की प्रेरणा हमें सदैव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन से प्राप्त होती है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आगे कहा कि गत दिवस गुजरात में तीसरी सेमीकंडक्टर कंपनी की शुरुआत हुई है। आज देश प्रौद्योगिकी और उद्योग के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाइयां प्राप्त कर रहा है, फिर भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के चिंतन में आज भी समाज के सबसे सुदूरवर्ती व्यक्ति की चिंता और स्वच्छता जैसे बुनियादी विषय समान रूप से सर्वोच्च प्राथमिकता पर हैं।

उन्होंने कहा कि सामान्यतः यदि किसी परिवार में 10 सदस्य हों, तो जैसे-जैसे आर्थिक स्थिति बेहतर होती जाती है, लोग छोटी-छोटी जिम्मेदारियों से स्वयं को अलग करने लगते हैं और दूसरों पर छोड़ देते हैं। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक वर्ग की आवश्यकताओं पर समान रूप से ध्यान दिया है। आज भारत विश्व के सामने गर्व के साथ खड़ा है और वैश्विक मंच पर भारत का उदाहरण लिया जाता है। यह गौरव देश को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदान किया है। सर्वसमावेशी विकास पर बात करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए हम सभी को कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना होगा। विकसित भारत के निर्माण के लिए 'विकसित गुजरात' अनिवार्य है। लेकिन विकसित भारत कैसे बनेगा? केवल एक-दो या दस शहरों के आगे बढ़ जाने से विकास को पूर्ण नहीं माना जा सकता। जब समाज का सुदूरवर्ती व्यक्ति भी विकास की मुख्यधारा से जुड़ेगा, तभी सही अर्थों में विकसित गुजरात का बनेगा और उसी के माध्यम से विकसित भारत का निर्माण होगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि यहां उपस्थित बच्चों की पूरी पीढ़ी ने अभी पढ़ने की शुरुआत की है। शिक्षा के माध्यम से जब यह नई पीढ़ी सक्षम और आत्मनिर्भर बनकर आगे बढ़ेगी, तब समाज की तस्वीर बदलेगी। उन्होंने जोड़ा कि पूरी पीढ़ी और पूरे समाज को सम्मानजनक जीवन की मुख्यधारा में लाने का जो यह महान एवं पवित्र कार्य किया जा रहा है, उसमें सहभागी बनने का अवसर हम सभी को मिला है। यह हम सबके लिए अत्यंत गौरव की बात है। इस अवसर पर गुजरात भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा ने कहा कि, सही अर्थों में जिसका कोई नहीं है, उसके लिए यह 'विचरता समुदाय समर्थन मंच' (वीएसएसएम) संस्था है। जिन लोगों के सिर पर केवल आकाश और पैरों तले धरती है, ऐसे बेघर तथा अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए संघर्ष कर रहे विचरणशील-विमुक्त जाति के लोगों के लिए यह संस्था अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'अंत्योदय' की विचारधारा के माध्यम से समाज के सुदूरवर्ती व्यक्ति की चिंता करते हुए देशभर में अनेक बेघर परिवारों को पक्के घर उपलब्ध कराए गए हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ने भी इस संस्था को कॉलोनी अथवा प्लॉट निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान की है, जो अत्यंत सराहनीय कार्य है। श्री विश्वकर्मा ने आगे कहा कि संस्था द्वारा इन विचरणशील और विमुक्त जातियों के बेटे-बेटियों तथा पारंपरिक व्यवसायों से जुड़े बुजुर्गों द्वारा तैयार किए जाने वाले हस्तशिल्प एवं हैंडीक्राफ्ट उत्पादों का एक अच्छा प्रेजेंटेशन तैयार किया जाए। इसके अतिरिक्त; सरकार के माध्यम से उन्हें उचित प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, ताकि वे बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद तैयार कर अपना आर्थिक विकास कर सकें। श्री नरेन्द्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने खादी खरीदने की शुरुआत करवाई थी और आज वह वैश्विक फैशन बनकर डेढ़ लाख करोड़ रुपए से अधिक के कारोबार तक पहुंच चुकी है। उसी प्रकार भविष्य में इन विचरणशील जातियों के परिवारों के उत्पादों को भी 'जीआई टैग' मिले तथा उनका बाजार विस्तृत हो, इसके लिए सरकार हमेशा उनके साथ है।

इस अवसर पर वीएसएसएम की संस्थापक ट्रस्टी श्रीमती मित्तलबेन पटेल ने शाब्दिक स्वागत करते हुए कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल की संवेदनशीलता तथा समग्र प्रशासन के सहयोग के परिणामस्वरूप विचरणशील जातियों के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त; इस संस्था को विभिन्न रूपों में दान देने वाले भामाशाहों के सहयोग से ही आज 2 हजार से अधिक घरों का निर्माण, 13 हजार परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ऋण, 470 तालाबों का गहरीकरण तथा वृक्षारोपण जैसे भागीरथ कार्य संभव हो सके हैं।

श्रीमती मित्तलबेन ने हमारी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संस्कृति का स्मरण कराते हुए समाज के सक्षम एवं संपन्न लोगों से भी अपील की कि वे अपनी धन-संपदा का कुछ भाग वादी, मदारी, सराणिया और कांगसिया जैसे परिवारों के उत्थान के लिए व्यय करें। लगभग 20 वर्ष पूर्व तंबूशाळा से प्रारंभ हुई यह यात्रा आज अनेक कार्यकर्ताओं के दिन-रात के परिश्रम से एक भव्य शैक्षणिक संकुल तक पहुंच चुकी है। भारत के अन्य राज्यों की तुलना में गुजरात में विचरणशील जातियों के लिए जो अभूतपूर्व कार्य हुआ है, वह वास्तव में गौरवशाली है।

इस अवसर पर कलोल के विधायक श्री लक्ष्मणजी ठाकोर, गांधीनगर के कलेक्टर श्री रविन्द्र खताले, श्री भगवानदास पंचाल, दाता श्री रोनकभाई नायक, आरती परिवार संकुल की भूमि के दाता श्री चन्द्रकान्तभाई गोगरी, डॉ. के. आर. ओंफ फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री उदयभाई देसाई, श्री प्रतुलभाई ओंफ, वीएसएसएम के अध्यक्ष श्री लीलाधर गडा, ट्रस्टी, सामाजिक अग्रणी, विद्यालय परिवार के सदस्य तथा बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक विचरणशील समुदाय के परिवार एवं बच्चे उपस्थित रहे।

अहमदाबाद के सोला सिविल में 'नमो स्वच्छता अभियान' एक्शन मोड में

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरणा तथा स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया के मार्गदर्शन में राज्यभर में 'नमो स्वच्छता अभियान' को गति मिली है। इस अभियान के अंतर्गत अहमदाबाद के सोला सिविल अस्पताल में स्वच्छता और मरीजों की सुरक्षा को केंद्र में रखकर व्यापक अभियान चलाया गया है।

राज्य सरकार के 'नमो स्वच्छता अभियान' अंतर्गत अहमदाबाद के सोला सिविल अस्पताल में स्वच्छता और मरीजों की सुरक्षा को केंद्र में रखकर व्यापक अभियान चलाया गया है। अस्पताल के विभिन्न विभागों से लगभग 79 किलोग्राम ठोस कचरे का निपटान किया गया है, जबकि 159 अनुपयोगी मेडिकल उपकरणों तथा 1,365 अनुपयोगी वस्तुओं को नियमानुसार स्क्रैप करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

अस्पताल की रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर डॉ. हेमांगिनी पटेल ने कहा कि अस्पतालजन्य संक्रमण (नोसोकोमियल इन्फेक्शन) को कम करने के उद्देश्य से माइक्रो स्तर पर सफाई, संक्रमणमुक्तिकरण तथा अनावश्यक सामग्री हटाने का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। मरीजों के लिए सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पूरे अस्पताल में सतत निगरानी रखी जा रही है।

अभियान के दौरान अस्पताल के इंडोर, आउटडोर, परिसर तथा शौचालय सहित सभी क्षेत्रों में व्यापक सफाई की गई है। इसके अलावा 508 अग्निशमन यंत्रों की रिफिलिंग अथवा नए यंत्रों की स्थापना का कार्य पूरा कर लिया गया है।

सुविधाओं के रखरखाव के कार्य में 319 नलों की जांच के दौरान 56 नलों की मरम्मत की गई अथवा उन्हें बदला गया। विद्युत व्यवस्था के अंतर्गत 63 बल्ब और 22 पंखों की मरम्मत कर मरीजों तथा उनके परिजनों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। अस्पताल के कुल 575 फर्नीचर, मेडिकल तथा आईटी उपकरणों में से 103 वस्तुओं की मरम्मत कर उन्हें पुनः उपयोग योग्य बनाया गया है।

डॉ. पटेल के अनुसार अस्पताल में उपयोग में लाई जा रही लगभग 300 पुरानी चादरें, तकियों के कवर तथा गद्दों को भी चरणबद्ध तरीके से बदला जा रहा है। साथ ही सभी मेडिकल एवं पैरामेडिकल कर्मचारियों को बायोमेडिकल वेस्ट के वैज्ञानिक निपटान के लिए कलर कोडिंग आधारित विशेष प्रशिक्षण दिया गया है।

उन्होंने कहा कि अस्पताल के प्रत्येक फ्लोर, दीवारों, खिड़कियों, कांच तथा पंखों की नियमित सफाई के साथ-साथ शौचालय, बाथरूम, टूटी हुई टाइलों सहित सिविल मरम्मत के कार्य भी तेजी से किए जा रहे हैं। स्वच्छता केवल एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि पूरे वर्ष चलने वाली सतत प्रक्रिया है और अस्पतालजन्य संक्रमण की दर को कम करने के लिए प्रशासन संपूर्णत प्रतिबद्ध है।

इस दौरान अस्पताल में उपचार करा रहे मरीजों के परिजनों ने भी अस्पताल की स्वच्छता और सेवाओं की सराहना की।

साणंद के प्रकाशकुमार मेणिया ने कहा कि डॉक्टरों से लेकर सफाई कर्मचारियों तक सभी ने त्वरित और सहयोगपूर्ण सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने नागरिकों से अस्पताल परिसर में स्वच्छता बनाए रखने में सहभागी बनने की अपील की।

बोडकदेव की अमी पटेल ने कहा कि सरकारी अस्पतालों के बारे में मन में जो गंदगी की धारणा थी, वह सोला सिविल अस्पताल की यात्रा के बाद पूरी तरह दूर हो गई। लगातार सफाई, शुद्ध पेयजल तथा व्यवस्थित वातावरण के कारण यह अस्पताल किसी कॉर्पोरेट अस्पताल से कम नहीं लगता।

कोरोना काल से अस्पताल में सेवाएं दे रही सफाई कर्मचारी रमीलाबेन मकवाणा ने बताया कि मरीजों के बेड, लॉकर, वेंटिलेटर तथा मॉनिटर जैसे संवेदनशील उपकरणों की प्रतिदिन गहन सफाई और संक्रमणमुक्तिकरण किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर मरीजों की चादरें दिन में दो बार भी बदली जाती हैं।

सोला सिविल अस्पताल में किया गया यह कामकाज इस बात का प्रतिबिंब है कि राज्य के सरकारी अस्पताल केवल गुणवत्तापूर्ण उपचार ही नहीं, बल्कि स्वच्छ, सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।

वाल्मीकि समाज की पारिवारिक विवाद समाधान समिति की नवसारी में बैठक हुई, सुलह पर जोर दिया गया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

सूरत जिला वाल्मीकि समाज सेवा बोर्ड द्वारा संचालित गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज कल्याण समिति द्वारा आयोजित पारिवारिक विवाद समाधान समिति की बैठक 05/07/2026 को दोपहर 2 बजे नवसारी सर्किट हाउस में वाल्मीकि पारिवारिक विवाद समाधान समिति के अध्यक्ष अधिवक्ता डी.सी. सोलंकी अंकलेश्वर के मुख्यालय में हुई। इसमें सूरत, नवसारी, वलसाड, बरदोली, व्यारा और भरूच से लगभग पचास भाई-बहन प्रतिनिधि उपस्थित थे। वैवाहिक विवाद के लगभग दस पक्ष उपस्थित थे और उन्होंने अपनी समस्याएं प्रस्तुत कीं। अध्यक्ष ने पक्षों की समस्याओं को सुनने और उनका समाधान करने का आश्वासन दिया। मुख्यालय से संबोधित करते हुए डी.सी. सोलंकी ने कहा कि वैवाहिक विवादों और अन्य मुद्दों का शांतिपूर्ण ढंग से समाधान किया जाना चाहिए। केवल नौकरी पर निर्भर रहने के बजाय, छोटे-बड़े व्यवसाय भी किए जाने चाहिए। अधिवक्ता बिपिनभाई राठौड़ ने विवाह विवाद समाधान समिति के गठन के लिए वाल्मीकि सोसाइटी को बधाई दी और सोसाइटी से सहयोग की अपील की। उन्होंने सोसाइटी को जागरूकता पैदा करने और रूढ़ियों को दूर करने का भी उपदेश दिया। शशिकांत सोलंकी ने सूरत जिले के हर शहर और हर तालुका में बैठकें आयोजित करने का अनुरोध किया। अधिवक्ता मयंकभाई सोलंकी ने विवाह को बनाए रखने और यदि संभव न हो तो कानून के प्रावधानों के अनुसार शांतिपूर्ण ढंग से अलग होने का समर्थन किया। अधिवक्ता नोटरी अश्विन वैष्णव, दिनेशभाई परमार, राजेशभाई मंजलपुरिया, संजयभाई सोलंकी, हरजीभाई धरानिया, अधिवक्ता नोटरी जितेशकुमार बिपिनचंद्र राठौड़ आदि ने प्रासंगिक भाषण दिए। समिति के आरंभ का स्वागत किया गया। गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज के अध्यक्ष भाई लाल बी वैष्णव ने वैवाहिक विवादों के कई उदाहरण दिए। यदि बहू को लड़की और सास को पिता के रूप में स्वीकार किया जाए तो अनेक विवाद समाप्त हो जाते हैं और जीवन शांतिपूर्ण ढंग से व्यतीत किया जा सकता है। वाल्मीकि समाज में साढ़े सोलह रुपये दहेज नाममात्र का लिया जाता है, लेकिन वैवाहिक विवाद होने पर लाखों रुपये की मांग की जाती है। इस बुराई को रोका जाना चाहिए। यदि किसी कारणवश विवाह दीर्घायु हो जाता है, तो समाज को इसका समाधान खोजना चाहिए। लेकिन किसी को परेशान करने के लिए मामले को वर्षों तक खींचना समाज के खिलाफ है, इसलिए ऐसे विवादों का शांतिपूर्ण समाधान होना चाहिए। मुकेशभाई चौहान ने स्वागत समारोह का संचालन किया। संत श्री बलदेव महाराज, संत श्री डी. के. बापू, संत श्री दिनेशभाई महाराज और संत श्री मनीष महाराज ने कार्यक्रम की सफलता की कामना की। संबंधित पक्षों ने समिति को लिखित में यह वचन दिया है कि वे अपने मामले के निपटारे के लिए समिति द्वारा लिए गए निर्णय का पालन करेंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से अहमदाबाद गांधीनगर कॉरिडोर के सर्वांगीण विकास को नई गति मिली

▸▸ गांधीनगर–एयरपोर्ट रोड पर महत्वपूर्ण नवीन केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज का लोकार्पण

▸▸ कोबा सर्कल तथा भाट सर्कल के बीच नर्मदा मुख्य कैनाल के ब्रिज को ट्वेल्व लेन में रूपांतरण करने वाले ब्रिज का शिलान्यास

▸▸ राज्य के शहरी क्षेत्र के प्रथम केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज का सड़क एवं भवन विभाग तथा औडा की सहभागिता से निर्माण

▸▸ 175 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित 1.48 किलोमीटर लंबे नवीन केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज से भाट सर्कल पर लगने वाले बार-बार के ट्रैफिक जाम से लोगों को राहत मिलेगी

▸▸ रिंग रोड का ट्रैफिक फ्लाईओवर के नीचे से तथा गांधीनगर–अहमदाबाद शहर की ओर का ट्रैफिक ब्रिज के ऊपर से गुजरेगा

▸▸ रिंग रोड–वडोदरा–सूरत की ओर जाने वाले ट्रैफिक के लिए 6 लेन का विशिष्ट सर्विस रोड

▸▸ कोबा सर्कल के निकट नर्मदा मुख्य कैनाल पर स्थित 6 लेन ब्रिज के दोनों ओर नए तीन-तीन लेन के ब्रिजों के निर्माण के लिए 48 करोड़ रुपए की परियोजना

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को राजधानी गांधीनगर को अहमदाबाद एयरपोर्ट से जोड़ने वाले मार्ग पर भाट चौराहे स्थित नवीन केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज का वाहनों के आवागमन के लिए लोकार्पण किया।

राज्य सरकार के सड़क एवं भवन विभाग तथा अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण (औडा) द्वारा पचास-पचास प्रतिशत की भागीदारी से इस नवीन फ्लाईओवर ब्रिज का निर्माण किया गया है।

175 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से निर्मित 1.48 किलोमीटर लंबा यह केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज राज्य के शहरी क्षेत्र का पहला केबल-स्टेड फ्लाईओवर ब्रिज है।

मुख्यमंत्री ने इस ब्रिज के लोकार्पण के साथ ही गांधीनगर–अहमदाबाद कॉरिडोर पर कोबा सर्कल से भाट सर्कल के बीच नर्मदा मुख्य कैनाल पर स्थित वर्तमान 6 लेन ब्रिज को ट्वेल्व लेन में परिवर्तित करने वाले रोड का भी लोकार्पण किया।

ट्रैफिक जाम के कारण उत्पन्न होने वाली बॉटलनेक की स्थिति को समाप्त करने के लिए कोबा सर्कल से भाट सर्कल के बीच स्थित वर्तमान ब्रिज के दोनों ओर तीन-तीन लेन वाले नए ब्रिजों के निर्माण के लिए 48 करोड़ रुपए की परियोजना राज्य सरकार ने पूरा करने का निर्णय किया है। इसके परिणामस्वरूप पूरे कॉरिडोर में लगातार छह लेन की क्षमता बनी रहेगी तथा भविष्य में बढ़ने वाले वाहन यातायात को भी सरलता से संभाला जा सकेगा।

गांधीनगर–कोबा–एयरपोर्ट रोड तथा एसपी रिंग रोड पर प्रतिदिन संयुक्त रूप से लगभग 1.93 लाख से अधिक वाहनों का आवागमन होता है।

गांधीनगर–एयरपोर्ट रोड पर स्थित भाट सर्कल एक प्रमुख जंक्शन होने के कारण वहां बार-बार ट्रैफिक जाम की समस्या उत्पन्न होती है, जिससे वाहन चालकों के समय, ईंधन और धन का व्यय होता है।

अब इस नए केबल-स्टेड ब्रिज के चालू होने से एसपी रिंग रोड का ट्रैफिक ब्रिज के नीचे से तथा अहमदाबाद–गांधीनगर की ओर जाने वाला ट्रैफिक ब्रिज के ऊपर से दो अलग-अलग स्तरों पर सरलता से संचालित हो सकेगा और लोगों को ट्रैफिक जाम की समस्या से राहत मिलेगी।

इतना ही नहीं; एसपी रिंग रोड, वडोदरा और सूरत की ओर जाने वाले वाहन यातायात की सरलता के लिए तीन-तीन लेन के कुल 6 लेन वाले विशिष्ट सर्विस रोड का भी निर्माण किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा इस नवनिर्मित केबल-स्टेड ब्रिज के लोकार्पण अवसर पर सांसद श्री हसमुखभाई पटेल, गांधीनगर की विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल एवं श्री अल्पेशभाई ठाकोर, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशीष दवे, संगठन के पदाधिकारी, सड़क एवं भवन विभाग के सचिव श्री प्रभात पटेलिया तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

अब भारत की बेटियाँ केवल चूल्हा ही नहीं जलाएंगी, बल्कि चिप्स भी बनाएंगी : प्रधानमंत्री ने जिन बेटियों का उल्लेख किया, उनकी सफलता की कहानी

झारखंड, मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों की बेटियाँ आईटीआई में पढ़ाई करके सेमीकंडक्टर चिप उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं

गांधीनगर : 04 जुलाई 2026 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से साणंद में सीजी सेमी की ओएसएटी सुविधा अंतर्गत चिप्स के व्यावसायिक उत्पादन का शुभारंभ किया गया है। इस अवसर पर भारत के सेमीकंडक्टर मिशन की सफलता में देश की बेटियों के योगदान के बारे में प्रधानमंत्री ने कहा, "यहाँ काम करने वाली बहनें-बेटियाँ झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के ट्राइबल बेल्ट से यहाँ आती हैं। जब इन बेटियों ने मुझे फैक्टरी दिखाई, तब उन्होंने बहुत ही उत्साह और आत्मविश्वास के साथ प्रत्येक प्रक्रिया के बारे में विस्तार से समझाया। सामान्य परिवारों में पली-बढ़ीं, सामान्य विद्यालयों में पढ़ीं और आईटीआई से शिक्षा प्राप्त करने वालीं ये बेटियाँ आज अद्भुत कार्य कर रही हैं।"

प्रधानमंत्री ने कहा, "एक समय ऐसा था कि हमारे यहाँ कोई आईटीआई में पढ़ता था, तो माता-पिता को उसका उल्लेख करने में भी शर्म आती थी, परंतु अब समय बदल गया है। भले ही उनकी शिक्षा आईटीआई में हुई हो, परंतु उनके सपने असाधारण हैं। इन बेटियों में से अनेक ऐसी हैं, जिनके परिवार में किसी ने कभी पासपोर्ट भी नहीं बनवाया था, पासपोर्ट देखा भी नहीं था। विदेश जाने की बात तो दूर, कई बेटियों ने तो दिल्ली या मुंबई भी नहीं देखा था, लेकिन आज वही बेटियाँ प्रशिक्षण के लिए मलेशिया गईं, उन्होंने विश्व की अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर टेक्नोलॉजी सीखी और आज वे सभी 'मेड इन इंडिया' सेमीकंडक्टर चिप्स के उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जिन बेटियों का उल्लेख किया, उनमें से कुछ बेटियों ने अपनी कहानी प्रस्तुत की है। इनमें झारखंड के गिरिडीह जिले की निवासी पूनम कुमारी, झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले की निवासी प्रियंका धनवार तथा मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले की निवासी शिवानी उइके ने अपने अनुभव बताए। ये तीनों बेटियाँ सीजी सेमी प्लांट में ऑपरेटर के रूप में मशीनों पर कार्य करती हैं।

पूनम कुमारी के पिता जीवित नहीं हैं और वे अपनी माता के साथ रहती हैं। पूनम कुमारी के अनुसार, "मैं कभी झारखंड से भी बाहर नहीं गई थी। हमें प्रशिक्षण के लिए मलेशिया भेजा गया था। यदि प्रशिक्षण के दौरान हमें कोई बात समझ में नहीं आती है, तो हमें हिन्दी में भी समझाया जाता और प्रैक्टिकली भी समझाया जाता है।"

प्रियंका धनवार ने कहा कि उनकी इस सफलता के कारण उनके माता-पिता ने गर्व की अनुभूति की है। उनके घर से वे पहली व्यक्ति हैं, जिन्होंने विदेश यात्रा की है। मध्य प्रदेश की शिवानी ने कहा, "हमारी सफलता देखकर माता-पिता की आँखों में खुशी के आँसू आ गए थे। सीजी सेमी के साथ हम इतिहास रचने जा रहे हैं।"

गुजरात के सांपों का जहर अब बनेगा 'संजीवनी' : 'एंटी स्नेक वेनम' बनाने के लिए कंपनी को सौंपा गया जहर

▶▶ गत सप्ताह वलसाड के धरमपुर स्थित सर्प अनुसंधान केंद्र ने एक लाइसेंस प्राप्त एंटी स्नेक वेनम उत्पादक कंपनी को गुजरात के जहरीले सांपों से निकाला गया जहर- लायोफिलाइज्ड (फ्रीज-ड्राइड)- एंटी-स्नेक वेनम बनाने के लिए दिया

▶▶ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य मंव सर्पदंश से होने वाली मानव मृत्यु को कम करने के लिए गुजरात ने अपना क्षेत्र-विशिष्ट एंटी स्नेक वेनम बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, जो जल्द ही उपलब्ध होगा : श्री अर्जुन मोढवाडिया, वन एवं पर्यावरण मंत्री

▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2024 में भारत सरकार ने 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' लॉन्च किया है

गांधीनगर : गुजरात में सर्पदंश के उपचार के लिए राज्य के ही जहरीले सांपों के जहर से बनाई गई क्षेत्र-विशिष्ट एंटी-स्नेक वेनम जल्द ही उपलब्ध होगा और सर्पदंश के उपचार में 'संजीवनी' साबित होगा।

राज्य के वलसाड जिले के धरमपुर में स्थित सर्प अनुसंधान केंद्र (स्नेक रिसर्च इंस्टीट्यूट-एसआरआई) ने गुजरात में पाए जाने वाले सांपों की चार मुख्य जहरीली प्रजातियों का लायोफिलाइज्ड (फ्रीड-ड्राइड यानी सूखा पाउडर स्वरूप) जहर तेलंगाना स्थित एक लाइसेंस प्राप्त एंटी-स्नेक वेनम बनाने वाली कंपनी को सौंप दिया है। जब यह एंटी-स्नेक वेनम गुजरात में उपलब्ध होगा, तो राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम किया जा सकेगा। साथ ही, इससे वर्ष 2030 तक सर्पदंश से होने वाली मौतों में 50 फीसदी की कमी करने के भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य में बड़ा योगदान मिलेगा।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा, "मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में, राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम करने के लिए गुजरात अपना क्षेत्र-विशिष्ट (रीजन-स्पेसिफिक) एंटी-स्नेक वेनम विकसित कर रहा है। धरमपुर स्थित सर्प अनुसंधान केंद्र सांपों की देखभाल और जहर निकालने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की गाइडलाइन का सख्ती से पालन करता है, ताकि एंटी-स्नेक वेनम बनाने के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण जहर मिल सके।"

गत सप्ताह, गुजरात वानिकी अनुसंधान फाउंडेशन (जीएफआरएफ) के अधीनस्थ कार्यरत सर्प अनुसंधान केंद्र ने एंटी-स्नेक वेनम बनाने वाली तेलंगाना स्थित कंपनी मेसर्स विन्स बायोप्रोडक्ट्स लिमिटेड को यह जहर सौंपा।

यह कंपनी सांप और बिच्छू के काटने पर उसके उपचार के लिए जीवन रक्षक वैक्सीन (एंटीसेरा) तथा टिटनेस, डिप्थीरिया और गैंगरीन रोधी वैक्सीन बनाने का काम करती है।

गुजरात वन विभाग द्वारा इस कंपनी को सौंपे गए जहर में 33.37 ग्राम भारतीय नाग (इंडियन कोबरा), 2.67 ग्राम कॉमन करैत, 30.82 ग्राम रसेल्स वाइपर और 1.71 ग्राम सॉ-स्केल्ड वाइपर का जहर शामिल है।

अब यह कंपनी गुजरात के क्षेत्र-विशिष्ट एंटी-स्नेक वेनम बनाने की प्रक्रिया शुरू करेगी। इस वैक्सीन की पहली खेप गुजरात को जल्द ही मिलने की संभावना है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ दिनों पहले, सर्प अनुसंधान केंद्र को उसके सांप के जहर की पहली ई-नीलामी के दौरान उम्मीद से अधिक कीमत मिली थी। सांप के जहर के लिए ऊंची कीमत मिलने के पीछे इस केंद्र द्वारा अपनाई गई कार्यपद्धति है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों का अनुसरण करती है।

वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र-विशिष्ट एंटी-स्नेक वेनम विकसित करना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत में मानव-वन्यजीव संघर्ष से होने वाली मौतों में सर्पदंश का आंकड़ा सबसे बड़ा है। सबसे अहम बात यह है कि यदि समय पर प्रभावी एंटी-स्नेक वेनम मिल जाए, तो इनमें से ज्यादातर मौतों को रोका जा सकता है।

गांधीनगर स्थित गुजरात वानिकी अनुसंधान फाउंडेशन के निदेशक एस.के. श्रीवास्तव ने कहा, "वर्ष 2022 में देशभर में वन्यजीवों के हमलों में 550 लोगों की मौत हुई थी, जबकि उसी अवधि में 65,000 लोगों ने सांप के डसने से अपनी जान गंवाई। यह बड़ा अंतर ही क्षेत्र-विशिष्ट एंटी-स्नेक वेनम की फौरी जरूरत को दर्शाता है। यह वैक्सीन एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले सांपों के जहर से ही बनी है, इसलिए यह अधिक प्रभावी सिद्ध होगी। इतना ही नहीं, इससे उपचार के दौरान कम डोज की जरूरत होगी और सर्पदंश के कारण इंसानों में होने वाली ऑर्गन फेलियर जैसी गंभीर समस्याओं का खतरा भी कम होगा तथा मरीज तेजी से ठीक होंगे।"

गुजरात के अपने जहरीले सांपों से बने एंटी स्नेक वेनम का महत्व

विशेषज्ञों के अनुसार, सांप का जहर भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से अलग-अलग होता है, फिर चाहे सांपों की प्रजाति एक ही क्यों न हो। देश के अन्य हिस्सों से पकड़े गए सांपों के जहर से बनाई गई एंटी-स्नेक वेनम वैक्सीन गुजरात के स्थानीय सांपों के डसने पर हमेशा पूर्ण रूप से प्रभावी साबित नहीं होती है।

इस वैज्ञानिक चुनौती को समझते हुए, गुजरात सरकार ने वलसाड जिले के धरमपुर में सर्प अनुसंधान केंद्र की स्थापना की है। यहां पूरे गुजरात से जहरीले सांप लाकर उनका जहर एकत्रित किया जा जाता है। इस जहर को बाद में एंटी-स्नेक वेनम बनाने वाली कंपनियों को नीलामी के जरिए दिया जाता है।

सर्प अनुसंधान केंद्र के उपाध्यक्ष और सर्पदंश के उपचार के लिए प्रसिद्ध डॉ. डी.सी. पटेल ने कहा कि सर्पदंश के उपचार में मुख्य चुनौती यह है कि अलग-अलग क्षेत्र के हिसाब से सांप का जहर भी भिन्न-भिन्न होता है। दूरदराज के क्षेत्रों से लाए गए जहर से तैयार किया गया एंटी-स्नेक वेनम अक्सर सर्पदंश के उपचार में कम प्रभावी सिद्ध होता है। यह संस्थान पूरे गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांपों की प्रजातियों से जहर एकत्रित करने पर ध्यान केंद्रित करता है, ताकि क्षेत्र-विशिष्ट एंटी स्नेक वेनम विकसित किया जा सके। डॉ. डी.सी. पटेल एक सर्जन हैं और उन्होंने सर्पदंश का उपचार करके लाखों लोगों की जान बचाई है।

अत्याधुनिक स्नेक वेनम रिसर्च सेंटर

सर्प अनुसंधान केंद्र में गुजरात में पाई जाने वाली मुख्य प्रजातियों के लगभग 471 जहरीले सांपों को रखा गया है। इन सांपों से जहर निकालने की प्रक्रिया विश्व स्वास्थ्य संगठन की गाइडलाइन के अनुसार की जाती है। बाद में इस जहर को वैज्ञानिक तरीके से प्रोसेसिंग करके लायोफिलाइज्ड (सूखे पाउडर) के स्वरूप में बदला जाता है और फिर इसे नीलामी के जरिए लाइसेंस प्राप्त निर्माता कंपनियों को सप्लाई किया जाता है।

यह संस्थान 'गुजरात वानिकी अनुसंधान फाउंडेशन' (जीएफआरएफ) के तहत कार्य करता है, जो गुजरात सरकार के वन एवं पर्यावरण विभाग के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है।

जीएफआरएफ के निदेशक एस.के. श्रीवास्तव ने कहा, "सर्प अनुसंधान केंद्र अपने वैज्ञानिक इंफ्रास्ट्रक्चर, सर्पगृह (सर्पेंटेरियम) और जहर प्रोसेसिंग की सुविधाओं के साथ, सर्पदंश के प्रबंधन, जहर पर अनुसंधान और जनजागरूकता फैलाने के लिए भारत के अग्रणी संस्थानों में से एक के रूप में उभरा है। तमिलनाडु में 'इरुला स्नेक कैचर्स इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसाइटी' के बाद एंटी-वेनम के उत्पादन के लिए जहर निकालने वाला यह देश का दूसरा संस्थान है।"

उन्होंने आगे कहा, "गुजरात सरकार ने इस संस्थान के विस्तार के लिए वलसाड जिले में विश्व स्तरीय स्थायी परिसर स्थापित करने के लिए 2.25 हेक्टेयर भूमि आवंटित की है। साथ ही, एक अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रशिक्षण ढांचा विकसित करने के लिए 11.68 करोड़ रुपए का प्रस्ताव भी दिया गया है।"

भारत के राष्ट्रीय सर्पदंश मिशन को समर्थन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, भारत सरकार ने 2024 में 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' यानी सर्पदंश से फैलने वाले जहर की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना लॉन्च की है। डब्ल्यूएचओ की वैश्विक रणनीति के अनुरूप, भारत वर्ष 2030 तक सर्पदंश से होने वाली मौतों और विकलांगता में 50 फीसदी की कमी करने के उद्देश्य के साथ ऐसी व्यापक राष्ट्रीय कार्ययोजना अपनाने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। गुजरात द्वारा विकसित किया जा रहा क्षेत्र-विशिष्ट एंटी-स्नेक वेनम राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

पोरबंदर स्टेशन यार्ड रीमॉडलिंग कार्य सफलतापूर्वक कमीशन, रेल परिचालन होगा अधिक सुरक्षित, तेज एवं आधुनिक

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने रेल अवसंरचना के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए पोरबंदर स्टेशन के यार्ड रीमॉडलिंग कार्य को 04 जुलाई, 2026 को सफलतापूर्वक कमीशन कर दिया है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पूर्ण होने से स्टेशन पर रेल परिचालन अधिक सुरक्षित, सुचारु एवं दक्ष बनेगा तथा ट्रेनों एवं रेकों के संचालन में उल्लेखनीय सुधार होगा।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में सम्पन्न इस परियोजना के अंतर्गत स्टेशन के इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (Electronic Interlocking–EI) सिस्टम का व्यापक आधुनिकीकरण किया गया है। परियोजना के तहत 72 रूटों के साथ नई इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली स्थापित की गई। इसके अतिरिक्त 25 नए प्वाइंट लगाए गए तथा 16 पुराने प्वाइंट हटाए गए। यार्ड में अब कुल 31 प्वाइंट, 44 डिटेक्शन प्वाइंट, 28 ट्रैक सेक्शन, 10 मुख्य सिग्नल तथा 17 शंट सिग्नल (09 डिपेंडेंट एवं 08 इंडिपेंडेंट) उपलब्ध हैं।

यार्ड रीमॉडलिंग के परिणामस्वरूप स्टेशन की परिचालन क्षमता एवं सुरक्षा में व्यापक सुधार हुआ है। इंजन एस्केप लाइन उपलब्ध होने से पूर्व में लाइन संख्या-1 (वर्तमान लाइन संख्या-2) पर होने वाली पुश-बैक मूवमेंट पूरी तरह समाप्त हो गई है, जिससे परिचालन अधिक सुरक्षित एवं तेज हो गया है।

इसके साथ ही यार्ड की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे ट्रेनों एवं रेकों के संचालन की दक्षता बढ़ेगी। नई डबल एग्जिट पिट-कम-वॉशिंग लाइन के निर्माण से रेकों की धुलाई, हटाने एवं लगाने की प्रक्रिया पहले की अपेक्षा अधिक त्वरित एवं सुविधाजनक हो गई है। वहीं डबल एग्जिट सुविधा के साथ निर्मित दो नई स्टेबलिंग लाइनों से खाली रेकों की आवाजाही अधिक सुचारु एवं शीघ्रता से संचालित की जा सकेगी।

परियोजना के अंतर्गत नॉन-इंटरलॉक्ड यार्ड को पृथक किए जाने से अब लाइन संख्या-6, 7 एवं 8 पर शंटिंग एवं ट्रेनों की रिसेप्शन प्रक्रिया एक साथ संचालित की जा सकेगी। इससे समय की बचत होने के साथ-साथ परिचालन क्षमता एवं कार्यकुशलता में भी उल्लेखनीय वृद्धि होगी। यार्ड रीमॉडलिंग कार्य के सफलतापूर्वक पूर्ण होने से पोरबंदर स्टेशन पर ट्रेनों एवं रेकों का टर्नअराउंड समय कम होगा, यार्ड की क्षमता बढ़ेगी, परिचालन में अधिक लचीलापन आएगा तथा सुरक्षा एवं विश्वसनीयता के मानकों में महत्वपूर्ण सुधार होगा। यह परियोजना भविष्य में बढ़ते रेल यातायात को अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित ढंग से संचालित करने में भी सहायक सिद्ध होगी। पश्चिम रेलवे यात्रियों को सुरक्षित, आधुनिक एवं विश्वसनीय रेल सेवाएँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आधारभूत संरचना के विकास तथा अत्याधुनिक तकनीकों के समावेश को निरंतर प्राथमिकता दे रही है। पोरबंदर स्टेशन यार्ड रीमॉडलिंग का सफल कमीशनिंग इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सूरत में खाद्य सुरक्षा अभियान: 77 प्रतिष्ठानों को नोटिस जारी, 153 में खामियां पाई गईं, 344 खाद्य नमूनों की जांच की गई

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम के स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग द्वारा की गई कार्रवाई में, शहर में खाद्य पदार्थों की बिक्री करने वाले 77 प्रतिष्ठानों को नोटिस जारी किए गए हैं। एफएसएसएआई के फूड सेफ ऐप के माध्यम से किए गए निष्पक्ष निरीक्षण में 153 प्रतिष्ठानों में स्वास्थ्य संबंधी कमियां पाई गई हैं।

सूरत नगर निगम के स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग ने शहर में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच के लिए एक गहन अभियान शुरू किया है। खाद्य सुरक्षा एवं स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग (FSSAI) के खाद्य सुरक्षा ऐप के माध्यम से किए गए निरीक्षण के दौरान नगर निगम ने लगभग 80 किलोग्राम अखाद्य पदार्थों को नष्ट कर दिया है। इसके अलावा, स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग ने संस्थानों से कुल 344 नमूने लिए हैं, जिनमें दूध और दूध उत्पादों के 43, खाद्य तेल और घी के 13 और काली मिर्च मसालों के 29 नमूने शामिल हैं। साथ ही, प्रवर्तन एवं निगरानी के 429 नमूने भी जांच के लिए भेजे गए हैं। शहर के 15 दूध वितरण संस्थानों से दूध के नमूने लेकर जन स्वास्थ्य विभाग को भेजे गए हैं। आने वाले दिनों में रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

इंडोनेशिया में चोरी करते पकड़े गए दो लोगों को भूरे रंग की टेप से लपेटकर पुलिस के हवाले कर दिया गया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

इंडोनेशिया में, दो युवकों ने चोरी करने के इरादे से एक दुकान में सेंध लगाई और पास के एक रिहायशी इलाके के सतर्क निवासियों ने उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया। चोर को पकड़कर पीटने के बजाय, लोगों ने उसे बांध दिया।

चोरों को भागने से रोकने के लिए, क्योंकि पुलिस को लगा कि अगला नंबर उन्हीं का होगा, लोगों ने दोनों चोरों को मोटी भूरी टेप से लपेट दिया। उन्हें कुर्सी पर इस तरह बांध दिया गया कि उनकी सिर्फ आंखें, नाक और मुंह खुले रह गए। उनमें से एक के सिर पर एंटीना जैसी टेप भी लगी थी, और पुलिस उसे एंटीना से पकड़कर ले गई।

बद्रीनाथ मंदिर में दान राशि में कथित अनियमितताओं के आरोपों के बाद जांच शुरू की गई; कर्मचारियों को नोटिस जारी किए गए

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

उत्तराखंड के बद्रीनाथ मंदिर में दान राशि की चोरी का आरोप लगा है। इसके बाद जांच शुरू कर दी गई है। भैरव सेना द्वारा लगाए गए इन आरोपों से मचे बवाल के बाद अब मंदिर समिति के कर्मचारियों और मंदिर समिति अध्यक्ष के निजी सहायक (पीए) को नोटिस जारी किए गए हैं।

राम मंदिर में दान चोरी के विवाद के बाद, बद्रीनाथ धाम में भी ऐसे ही आरोपों से श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत हुई हैं। भैरव सेना के अध्यक्ष संदीप खत्री ने मंदिर समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोहन सिंह रागड़ को पत्र लिखकर प्रसाद में कथित अनियमितताओं की जांच की मांग की है।

मुंबई की धरती के नीचे दौड़ेगी रफ्तार: बुलेट ट्रेन परियोजना ने सुरंग निर्माण के सबसे अहम चरण में रखा ऐतिहासिक कदम

मुंबई-अहमदाबाद हाईस्पीड रेल (बुलेट ट्रेन) परियोजना ने शनिवार को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए अपने सबसे चुनौतीपूर्ण और तकनीकी रूप से जटिल चरण में प्रवेश कर लिया। परियोजना के तहत पहली अत्याधुनिक टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) ने मुंबई के विखरोली शाफ्ट से बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) स्थित निर्माणाधीन भूमिगत स्टेशन की दिशा में सुरंग की खुदाई शुरू कर दी। इसे केवल एक निर्माण कार्य नहीं, बल्कि भारत के आधुनिक रेल बुनियादी ढांचे के इतिहास में एक नया अध्याय माना जा रहा है। घनी आबादी, बहुमंजिला इमारतों, महत्वपूर्ण सड़क मार्गों, नदी और भूमिगत उपयोगिताओं के नीचे सुरक्षित सुरंग बनाना इंजीनियरिंग की दृष्टि से अत्यंत जटिल कार्य है, लेकिन अत्याधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक निगरानी के सहारे इस चुनौती को स्वीकार किया गया है।

इस ऐतिहासिक कार्य का औपचारिक शुभारंभ केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के हाथों होना था। इसके लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई थीं, लेकिन मुंबई में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश और मौसम विभाग द्वारा जारी रेड अलर्ट के कारण अंतिम समय में उद्घाटन कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। हालांकि मौसम की बाधा के बावजूद परियोजना के निर्धारित कार्यक्रम में कोई परिवर्तन नहीं किया गया और शनिवार से टनल बोरिंग मशीन ने तय योजना के अनुसार भूमिगत खुदाई का कार्य प्रारंभ कर दिया। इससे यह स्पष्ट संदेश गया कि परियोजना की समयसीमा और निर्माण गति को बनाए रखने के लिए सभी एजेंसियां पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

राष्ट्रीय हाईस्पीड रेलवे निगम लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) के अनुसार, मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा मुंबई महानगर क्षेत्र का 21 किलोमीटर लंबा भूमिगत सेक्शन है। इस पूरे भूमिगत मार्ग में लगभग 16 किलोमीटर लंबी सुरंग टनल बोरिंग मशीनों की सहायता से बनाई जाएगी, जबकि शेष लगभग पांच किलोमीटर हिस्से का निर्माण पहले ही न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (एनएटीएम) के माध्यम से सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है। अब टीबीएम द्वारा शुरू की गई खुदाई परियोजना की वास्तविक गति को नई दिशा देगी।

विखरोली से लॉन्च की गई यह विशाल टनल बोरिंग मशीन लगभग छह किलोमीटर लंबी एकल ट्यूब सुरंग तैयार करेगी। इसी सुरंग के भीतर बुलेट ट्रेन के अप और डाउन दोनों ट्रैक स्थापित किए जाएंगे। सुरंग का मार्ग मुंबई के सबसे व्यस्त और संवेदनशील शहरी क्षेत्रों से होकर गुजरेगा। इसमें बहुमंजिला इमारतों की नींव, प्रमुख सड़कें, मीठी नदी तथा अनेक भूमिगत सेवाओं के नीचे से सुरक्षित निर्माण किया जाएगा। यही कारण है कि इस चरण को पूरी परियोजना का सबसे जटिल इंजीनियरिंग अभियान माना जा रहा है।

यह टनल बोरिंग मशीन भारत में रेल सुरंग निर्माण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सबसे बड़ी और अत्याधुनिक मशीनों में शामिल है। इसका कटरहेड लगभग 13.6 मीटर व्यास का है, कुल वजन लगभग 3,100 टन है और इसकी लंबाई करीब 96 मीटर है। इतनी विशाल मशीन का संचालन अपने आप में एक जटिल तकनीकी प्रक्रिया है, जिसमें सैकड़ों विशेषज्ञ, इंजीनियर और प्रशिक्षित तकनीशियन लगातार निगरानी करते हैं। मशीन की डिजाइन इस प्रकार तैयार की गई है कि वह कठिन भूभाग में भी सुरक्षित और निरंतर खुदाई करती रहे।

परियोजना में मिक्सशील्ड तकनीक का उपयोग किया जा रहा है, जिसे विशेष रूप से ऐसे क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है जहां मिट्टी की प्रकृति लगातार बदलती रहती है और भूजल का दबाव अधिक होता है। इस उन्नत स्लरी आधारित प्रणाली में दबावयुक्त बेंटोनाइट घोल का उपयोग किया जाता है, जो खुदाई के दौरान सुरंग के अग्रभाग को स्थिर बनाए रखता है। इससे जमीन धंसने की संभावना काफी कम हो जाती है और सतह पर स्थित भवनों, सड़कों तथा अन्य संरचनाओं पर न्यूनतम प्रभाव पड़ता है। यही तकनीक दुनिया की कई बड़ी हाईस्पीड रेल परियोजनाओं और मेट्रो नेटवर्क में सफलतापूर्वक अपनाई जा चुकी है। इस मशीन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल सुरंग की खुदाई ही नहीं करती, बल्कि खुदाई के साथ-साथ सुरंग की दीवारों को मजबूत बनाने वाले प्रीकास्ट कंक्रीट सेगमेंट भी तुरंत स्थापित करती चलती है। इससे निर्माण कार्य की गति तेज होती है, सुरक्षा का स्तर बढ़ता है और सुरंग को तत्काल संरचनात्मक मजबूती मिल जाती है। यही कारण है कि आधुनिक भूमिगत रेल परियोजनाओं में इस तकनीक को सबसे सुरक्षित और प्रभावी माना जाता है।

टीबीएम को लॉन्च करने के लिए विखरोली में लगभग 56 मीटर गहरा विशेष शाफ्ट तैयार किया गया है। इसकी गहराई लगभग 20 मंजिला इमारत की ऊंचाई के बराबर है। इस विशाल निर्माण स्थल पर आधुनिक इंजीनियरिंग सुविधाओं का पूरा ढांचा विकसित किया गया है। यहां वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, स्लरी ट्रीटमेंट प्लांट, बेंटोनाइट स्टोरेज सिस्टम, समर्पित विद्युत उपकेंद्र, उच्च क्षमता वाले बैकअप जनरेटर, रेडी-मिक्स कंक्रीट प्लांट तथा अन्य तकनीकी इकाइयां स्थापित की गई हैं, ताकि सुरंग निर्माण का कार्य बिना किसी बाधा के लगातार जारी रह सके।

घनी आबादी वाले महानगर में भूमिगत खुदाई के दौरान सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य से पूरे सुरंग मार्ग पर अत्याधुनिक रियल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम लगाया गया है। इस प्रणाली के माध्यम से जमीन की हलचल, कंपन और संरचनात्मक बदलावों पर चौबीसों घंटे निगरानी रखी जाएगी। इसके लिए सरफेस सेटलमेंट पॉइंट्स, ऑप्टिकल डिस्प्लेसमेंट सेंसर, टिल्ट मीटर, स्ट्रेन गेज और सिस्मोग्राफ जैसे अत्याधुनिक उपकरण लगाए गए हैं। यदि कहीं भी सामान्य सीमा से अधिक हलचल दर्ज होती है, तो संबंधित इंजीनियरों को तुरंत सूचना मिल जाएगी और आवश्यक तकनीकी कदम तत्काल उठाए जा सकेंगे। सुरंग निर्माण के लिए आवश्यक कंक्रीट सेगमेंट तैयार करने का कार्य भी बड़े पैमाने पर चल रहा है। ठाणे जिले के म्हापे में लगभग 11.17 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित विशेष कास्टिंग यार्ड में इस परियोजना के लिए लगभग 77 हजार प्रीकास्ट कंक्रीट सेगमेंट बनाए जा रहे हैं। इन्हीं से लगभग 7,700 टनल रिंग तैयार होंगी। प्रत्येक रिंग का वजन लगभग 100 टन होगा और इन्हें अत्यधिक मजबूत तथा पूरी तरह जलरोधी बनाया जा रहा है। पानी के रिसाव को रोकने के लिए डबल-लेयर ईपीडीएम गैस्केट तथा हाइड्रोफिलिक सील जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे सुरंग की दीर्घकालिक मजबूती, टिकाऊपन और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना को भारत के परिवहन इतिहास की सबसे महत्वाकांक्षी आधारभूत संरचना परियोजनाओं में गिना जाता है। इस परियोजना के पूरा होने के बाद दोनों महानगरों के बीच यात्रा का समय उल्लेखनीय रूप से कम हो जाएगा। साथ ही हाईस्पीड रेल तकनीक, उन्नत इंजीनियरिंग, आधुनिक निर्माण पद्धतियों और अत्याधुनिक सुरक्षा मानकों के क्षेत्र में भारत को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिलेगी। परियोजना के तहत विकसित होने वाली तकनीकी विशेषज्ञता भविष्य में देश की अन्य हाईस्पीड रेल परियोजनाओं के लिए भी मजबूत आधार तैयार करेगी। विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुरंग निर्माण की सफलता केवल एक इंजीनियरिंग उपलब्धि नहीं होगी, बल्कि यह भारत की तकनीकी क्षमता, आधुनिक निर्माण कौशल और बड़े पैमाने की आधारभूत परियोजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरा करने की क्षमता का भी प्रमाण बनेगी। विखरोली से शुरू हुई यह भूमिगत यात्रा केवल बुलेट ट्रेन की सुरंग नहीं खोद रही, बल्कि भारत के परिवहन भविष्य के लिए नई संभावनाओं का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है। आने वाले वर्षों में जब इस सुरंग से होकर देश की पहली बुलेट ट्रेन मुंबई और अहमदाबाद के बीच तेज रफ्तार से दौड़ेगी, तब यह क्षण भारतीय रेल इतिहास में तकनीकी आत्मनिर्भरता, आधुनिक विकास और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में याद किया जाएगा।

बाजार की तेजी से दिग्गज कंपनियों को मिला बूस्ट, छह शीर्ष कंपनियों की मार्केट वैल्यू एक लाख करोड़ रुपये से अधिक बढ़ी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले सप्ताह आई मजबूती ने देश की सबसे बड़ी सूचीबद्ध कंपनियों के निवेशकों के चेहरे पर मुस्कान लौटा दी। लगातार कई कारोबारी सत्रों तक बनी सकारात्मक धारणा के बीच शीर्ष-10 मूल्यवान कंपनियों में से छह कंपनियों के संयुक्त बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैपिटलाइजेशन) में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इस तेजी का सबसे अधिक लाभ दूरसंचार क्षेत्र की दिग्गज कंपनी भारती एयरटेल और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी बजाज फाइनेंस को मिला, जिनकी बाजार हिस्सेदारी और निवेशकों का भरोसा दोनों मजबूत हुए हैं। दूसरी ओर, कुछ बड़ी कंपनियों के बाजार मूल्य में गिरावट भी देखने को मिली, लेकिन इसके बावजूद रिलायंस इंडस्ट्रीज देश की सबसे मूल्यवान कंपनी का अपना स्थान बनाए रखने में सफल रही।

पूरे सप्ताह बाजार का रुख सकारात्मक रहा। निवेशकों का विश्वास मजबूत घरेलू आर्थिक संकेतकों, बेहतर जीएसटी संग्रह, औद्योगिक उत्पादन में सुधार, विदेशी निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी तथा वैश्विक स्तर पर ब्याज दरों में नरमी की संभावनाओं से बढ़ा। इसी सकारात्मक माहौल का असर प्रमुख सूचकांकों पर भी दिखाई दिया। सप्ताह के दौरान बीएसई सेंसेक्स 663.44 अंक यानी 0.86 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुआ, जबकि एनएसई निफ्टी 214.85 अंक यानी 0.89 प्रतिशत चढ़कर अपने उच्च स्तर के करीब पहुंच गया। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद और कॉरपोरेट कंपनियों के बेहतर वित्तीय प्रदर्शन ने निवेशकों को खरीदारी के लिए प्रेरित किया।

इस तेजी का सबसे बड़ा फायदा भारती एयरटेल को मिला। कंपनी के बाजार पूंजीकरण में लगभग 36,529 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ, जिससे उसका कुल बाजार मूल्य करीब 11.64 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। दूरसंचार क्षेत्र में लगातार बढ़ते ग्राहक आधार, बेहतर औसत राजस्व (एआरपीयू) और डिजिटल सेवाओं के विस्तार ने कंपनी के प्रति निवेशकों का विश्वास और मजबूत किया है। विशेषज्ञों का मानना है कि 5जी सेवाओं के विस्तार और डेटा खपत में वृद्धि आने वाले समय में भी कंपनी की विकास यात्रा को गति दे सकती है।

बाजाज फाइनेंस भी इस सप्ताह बाजार की बड़ी विजेता कंपनियों में शामिल रही। कंपनी के बाजार पूंजीकरण में लगभग 33,060 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई। उपभोक्ता ऋण, डिजिटल वित्तीय सेवाओं और मजबूत परिसंपत्ति गुणवत्ता के कारण निवेशकों ने इस कंपनी के शेयरों में जमकर खरीदारी की। वित्तीय क्षेत्र में कंपनी की निरंतर विकास दर और लाभप्रदता ने इसे निवेशकों की पहली पसंद बनाए रखा है।

बैंकिंग क्षेत्र ने भी बाजार की तेजी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निजी क्षेत्र के प्रमुख बैंक आईसीआईसीआई बैंक और एचडीएफसी बैंक के बाजार मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। दोनों बैंकों ने मजबूत ऋण वृद्धि, बेहतर परिसंपत्ति गुणवत्ता और स्थिर मुनाफे के दम पर निवेशकों का भरोसा कायम रखा। बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ती ऋण मांग और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का सीधा लाभ इन संस्थानों को मिल रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे बड़ी बीमा कंपनी एलआईसी तथा उपभोक्ता उत्पाद क्षेत्र की अग्रणी कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर के बाजार मूल्य में भी अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिली, जिससे इन कंपनियों के निवेशकों को भी लाभ हुआ।

हालांकि, सभी कंपनियों के लिए यह सप्ताह समान रूप से लाभदायक नहीं रहा। देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज के बाजार पूंजीकरण में मामूली गिरावट दर्ज की गई। इसके अलावा इंजीनियरिंग क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी), सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की अग्रणी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के बाजार मूल्य में भी कमी आई। विशेषज्ञों के अनुसार, इन कंपनियों में हुई गिरावट मुख्य रूप से मुनाफावसूली और वैश्विक बाजारों से जुड़े कुछ कारकों का परिणाम रही।

इसके बावजूद कुल बाजार मूल्यांकन के आधार पर रिलायंस इंडस्ट्रीज देश की सबसे मूल्यवान सूचीबद्ध कंपनी बनी हुई है। उसके बाद एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का स्थान रहा। यह क्रम दर्शाता है कि ऊर्जा, बैंकिंग, दूरसंचार और वित्तीय सेवाओं से जुड़ी कंपनियां भारतीय शेयर बाजार में सबसे अधिक प्रभावशाली बनी हुई हैं।